

अंशतपनं ॥ १ ॥ तर्वादि ॥ अहिलकनेकाद ॥
मिहिविद्वदममका ॥ २ ॥ श्री ॥ अहिलकनेकाद ॥
कितीनवा ॥ ३ ॥ अहिलकनेकाद ॥
महेश्वरपाद ॥ ४ ॥ अहिलकनेकाद ॥
नादिकत्र ॥ ५ ॥ अहिलकनेकाद ॥
नादवीजवात्रति ॥ ६ ॥ अहिलकनेकाद ॥

अहिलकनेकाद ॥
अहिलकनेकाद ॥
अहिलकनेकाद ॥
अहिलकनेकाद ॥
अहिलकनेकाद ॥

२३

गमकपालवर्दीमदसि ॥ कर्कहिका ॥ श्रीमर्तयागिना ॥ सर्वलिखिपदायका ॥ कतः कववदयैहा लुहानवकुविता ॥
ना समयवकुसमावधमपामकुनवागिन ॥ एकववदयैवद ॥ ईहददय ॥ तमहिनिनसिखाहा ॥ हंनिवा ॥ वा ॥
हस्तधदय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥
कुरुपैहनु ॥ यन ॥ पैवमेकजसूर्यनिषकुमपनमान्यत ॥ घडिः कववदयैवद ॥ ईहददय ॥ तमहिनिनसिखाहा ॥ हंनिवा ॥ वा ॥
हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥
हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥

चविह्यासूतदायकी ॥ श्रीमर्तयागिना ॥ सर्वलिखिपदायका ॥ कतः कववदयैहा लुहानवकुविता ॥
दिगधमर्त ॥ प्रियदर्शनम ॥ देसैदनी ॥ कौ ॥ वडपूजादिसर्वषपिवकिस्तनपातया ॥ डयानैवापिकातीनविप्रर्तगम
दिना ॥ हपिः कतः ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥
कववददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥
विधुसर्तवादिनीवदधमपुस्तपयत् ॥ यागिनीपातहा ॥ कुरुवकुलकाजमदत ॥ लावनाहपमूसायद ॥ डियमस्तनाम
दानादिपानमिगानीकर्मतासोखामिखाती ॥ मेरीकनू ॥ मदितामपकासर्व ॥ छतः ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥ हंहावददय ॥

[illegible][illegible]

[illegible]

हा कानि सर्वाणि किंदिनि लोकधनं । अनायासं कर्तव्यं न कुरुष्व दवती मम ॥ अनायासं कथा वृत्ता अनायासं हसित यदि । जियादि दीप्त
 ह्या कोमानी सुवयस्य ललाटे ॥ अनायासं कर्तव्यं न कुरुष्व दवती मम ॥ अनायासं कथा वृत्ता अनायासं हसित यदि । जियादि दीप्त
 र्थमागैव क्राम्यते । पादेषु पश्यत रूमो ह्यनन्या गम्यते । पूजा काले प्रसादात् मन्त्राणां विग्रह मय्यग ॥ अनायासं कर्तव्यं न कुरुष्व दवती मम ॥ अनायासं कथा वृत्ता अनायासं हसित यदि । जियादि दीप्त
 याऽसिद्धिं कुरुते । तस्मात् पूजा प्रयत्नं न साधकालं कुर्यात् सदा ॥ पूजयेद्भक्तः कर्तव्यं सर्वकामं कुरुष्व दवती मम ॥ अनायासं कर्तव्यं न कुरुष्व दवती मम ॥ अनायासं कथा वृत्ता अनायासं हसित यदि । जियादि दीप्त
 भक्तः कुरुष्व दवती मम ॥ अनायासं कर्तव्यं न कुरुष्व दवती मम ॥ अनायासं कथा वृत्ता अनायासं हसित यदि । जियादि दीप्त
 अनायासं कर्तव्यं न कुरुष्व दवती मम ॥ अनायासं कथा वृत्ता अनायासं हसित यदि । जियादि दीप्त

[illegible][illegible]

[illegible]

मालावती लीला भक्तनधूलिकी। लकीरुका उर्वरमेवलीवितवज्रनिका॥ वामनविक्रमी वसिताहरी तुमसुकी। कीकाले ददिकाये व
नजवकगुलवर्हकी। अनिश्चनकी लकीवगीरुपूनी कनपुनसूविनु कायकर्म वमघरुदिवतासिकी॥ उर्वरुममुविह्याघास
फुतिरुमालिका। अधिकषुकमाखीव ददिवमावगुदक॥ उर्वरुममुविह्याघास। उर्वरुममुविह्याघास। उर्वरुममुविह्याघास।
थवानायकवर्हवगु॥ मृगुमालादिसर्वववगु वननिकायजी। उर्वरुममुविह्याघास। उर्वरुममुविह्याघास। उर्वरुममुविह्याघास।
पतलवर्हदाहि पदालिकी। समाधिगालमापूर्यप्रताखन सर्वलीनता॥ गलावद्वसमाप्रातिनानानियतिरुगुवी। स्वसहावया
धर्मकरदमपनिखलपजी। सुमनउर्वरुममुविह्याघास। उर्वरुममुविह्याघास। उर्वरुममुविह्याघास।

[illegible][illegible]

पुष्प उमरुखाडाडा... कीर्तन मम यो यदि सैषा... मार्ग... वय सदा मानु म... अहय...
य... न... ह... र... यदि... सै... क... साधक... स... की... र... मा... न... य... मान...
मानु... की... मा... य... र... दी... प... सा... व... व... य... र... पी... य... मा... क... म...
स... अ... ति... वि... नी... की... य... र... स... र... दु... का... र... गु... डि... की... का... न... र... म... र्म... क... सा... ध... य... न... दु... मा... प... क...
प... न... र... म... न... अ... ध... य... ति... र... य... क... र्म... न... र... म... न... म... र्म... न... र... म... र्म... न... र... म... र्म...
न... र... म... र्म... न... र... म... र्म... न... र... म... र्म... न... र... म... र्म... न... र... म... र्म... न... र... म... र्म...

महिनायकी॥ सर्वयाग समावाज वज्र सख १ सुखायनी॥ ॥ ॐ तिथी वज्रवा नाही कल्प महातुजा जपे वा म...
ना... मा... दि... पे... द... म... प... ट... ल... ॥ १० ॥ अ... ध... न... न... का... ना... ह्या... दु... क... थ... त... ल... वि... स्फ... र्ण...
हि... का... ना... ह्या... रु... म... न... क... र्म... म... ह्या... न... गि... नि... दा... न... नी... का... न... व... ज... म... र्म... सा... पि... सु... ज... व... स... र्म... ग... मि... नी... वा... धि... वि... र्म... म... ह्या... न... दा... र्क... का... ला...
म... न... क... ह... नी... क... म... र्म... स... र्म... ना... म... दि... र्म... या... ग... म... न... र्म... नी... म... ह्या... दु... र्म... द... वी... दु... ग... ली... र्म... द... ल... र्म...
प... म... क... क... र्म... पि... र्म... द... न... प... थ... र्म... स... नि... र्म... मा... स... म... क... र्म... ह्या... दु... र्म... स... व... वा... न... स... क... र्म... प... र्म... सा... र्म...
दी... या... वि... धि... ध्या... न... र्म... इ... नी... वा... ल... म... नी... प... थ... इ... धि... नी... क... र्म... र्म... ना... म... प... नी... वा... धि... ग... म... मा... दा... स... र्म... र्म... र्म... र्म... र्म...

[illegible]

लौकिकवैश्वदेवप्रभुवक्तृ॥ अलवक्तुमाध्यहीनाद्वक्तुस्तुलकी। नैरानि सर्वनादवाद्यस्तुतिष्वक्तुः॥ तान्त्रिकीगुटीतिद्वान्ना
 निर्युहाद्यानलानिका। नदद्वैतवादिनाहिः कपालपङ्ककस्थम्। धनतीपङ्किकाश्च नत्तलानाद्वैतिका॥ कर्मवीर्यनुगत
 द्दत्तञ्जनीपङ्किकास्थम्॥ सैलानिर्गतासुर्विविधकजमहायुर्ति। किंकितीशालवस्तुथपटाकाद्यवृत्तादिनी। नदाकाः कुत्र
 सर्वेष्वनटकादिसमासित्वम्। विश्ववक्तावलीरुषतः॥ तदाश्चवक्तुवाउदुहम्पानूयनासित्वम्। कर्तिकावलीपदयामुम्
 तुषातागपेक्षः॥ गर्हपयस्यवाक्कुतत्तावलीसमालित्वम्। नानाद्वैतानिख्यादुवेषुयादिसमन्वितः। वीजविन्यासकं
 कूर्पकूर्पिकासर्वसम्पत्। अथवाकार्यादिकाः श्रेवज्जनेः सर्वमपुत्री। तथापिप्रटिकाकानेवीजकर्मपुलपाः॥ ३॥ पञ्चद

[illegible]

लहकने उडा मूले कपिल नूक भगनू उगद्वका कमु उलकव कसत के ॥ महा मडु वज्र गक मयून गाव दू दो ॥ पा गव नमु सर्व पी
स्वरा व वरी मिष्यनी ॥ मगुले स्य क दुह्वा वे स्वरा वीय स्य धा उष ॥ सफु जिं न गु भस्मा व प्रकृतये ॥ पी दि धार्यत ॥ तथा पति वि
वमू र्वा गति वा धि कृता ननी ॥ वन ले हंत व दे देव आजा देव दि मध्वगी ॥ दानि ले विष्णु न दैव उक्ता दित्य नू रा ॥ १००५ वायू
थ ने मल्य धन द नु य प ऊ मी ॥ वामय मथ काम थ वी ड व नू ल वा नु किश म द नी ग त पति थ का कय व ज व र्दे नी ॥ ७ व म द्वा द न का
ने स्व सा ता दु न न रु की ॥ धार्य मा ती व विरु न द न्ना थ न ल व ज ध क ॥ दानि ले न मु दे देव द जा सि की न मू ल की ॥ प न नु क र्हि वा ती
व नू ल रि न मु मू र्ज नी ॥ वज्र उ म नू नु रि का द उ क र्हि पि पाल की ॥ लेख क नी क ति का मयून पि ष्टु का तथा ॥ का क प न व वि का व

अत्रिकुपर्वतग। तदुत दर्वतगनागु। रूपाभिः सुस्तरुटैः॥ मनु नानाज्ञानिगनुहति इहृषणातिका। कर्वधकालते नैवसेनव
नृपे उरुमाह। वामच भषटदईनृ। तजगीकपालकी। धनूखडंगम्। मपिज्ञानिगर्जनीतवधघयून्मा। रीतवनेति। ग
रुम। नधूपिकी। शककुजा उर्ध्वमेव। रीतवधयातिका। वादनविलिकचीव। सलोह। सेहुमरकी। रीतवनेति। दन्दिजाववनेतुवक
गु। व। हेकी। नतिथनीकीलकीवधानृ। रीतवधयातिका। सुवीरुकायकमेवमयवीरुवता। रीतवनेति। विहयादासफणि
कुजातिका॥ अधितषकनाह। दद्विधमीवमद्वकधनेधकगगा मूटहातिकाविष्ट। रीतवनेति। नृपक
नायकिवधुवह। मनुमातादिमवववधुननतीतिका मयह। उवेसमग्यायामवीवविहृदर। रीतवनेति। नृपक
नायकिवधुवह। मनुमातादिमवववधुननतीतिका मयह। उवेसमग्यायामवीवविहृदर। रीतवनेति। नृपक

पतलावयद्विपदायकी। तावद्वि विधमात्मा रीतवधयातिका। उरुननासिका दानवउतवधुमातुह। आयनेपातसूर्यस
अवधुनीवानुमाह। येका नै सुविमरुतमकारनैमध्ववाहिनी। दकोनदकितगादयातावदुहदिमध्वमा॥ अकाना। रीत
मा प्रातिवैवनाकातागे। मिनी। नाडीसवेसुवा। मातैनाडीका नेहसीगिक। समुदायाहूनेपैव मंगुलपुनसुवनाह। उषू
वात्सवयपहिविद्याका नहृधैवनाह। उकमेकपृथ्वेवपीजादिममनादिकी। मरुनीमविकु। यार्नीयनखवनीपद। वनू
रुवदुकायिकीहावितैकथा॥ रीतवधुवह। मनुमातादिमवववधुननतीतिका मयह। उवेसमग्यायामवीवविहृदर। रीतवनेति। नृपक
नायकिवधुवह। मनुमातादिमवववधुननतीतिका मयह। उवेसमग्यायामवीवविहृदर। रीतवनेति। नृपक

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवाः ॥ मामकाः पाण्डवाश्चैव ततः समासुराः ॥ अहं भूतार्जुन ॥ १ ॥

सह। वज्रमूला तयं धीमं पशुवा दनतसर्ग। उद्दय सुद्धा मासदवा स्रगुष्क काता। अर्प सन दुद्धा माविश्राक वित्कट पूत
ना॥ अर्प कने लवत्तु गीमात् नता वज्रपया रती। वज्रले दीप वपूषा हू नयामि प्रे काय गौ। लय यश्च य कवित्प्र विदीर्य दे
यता तथा। हूमि पने गहं हं लागी माया का नव धय न। पृथिवी र्वी कान गोपी ती कनक कलहा भो विती। पुनिरुद्धा किं लाह रु
मूर्ति कला रुया रुय न। भा निरुता सि त्वं द वि अमू का म गु र्नी निख न्। पृष्य धू पा दिना पू र्ण मूर्ध द वा विव क्त ल भ रु ग व ऊ
ध स रु र्ज म ध्व म रु क भ ग ती॥ ७२ ॥ इति तिखि र्ना य म गु र्नी सह जा द यौ। निष्पा ल म नू र्क पा र्थ मू ष्या की पू र्ण ना य वा। न म रु
क ल्प रु ग व य सा दी क र्त्तु म र्ह सि। स म त्वा ह न रु र्नी वृ द्वा य वा न्य म रु द व ना द व ता ल्य क पा ला थ रु ता र्त्त वा धि सा सि ता भ सा स

[illegible]

लुप्तगता न तथ कुर्गुलनेव काष्ठमकी विद्वंधः॥ तदर्थं विपुलं लब्धं नित्यं गुल्लुङ्गी की। लुङ्गी किं न तथ कुर्गु। एतत्तुल्लुङ्गी लुङ्गी।
 आकृष्टा वा जपर्यक्तं न तथ विधिनादिनी। पंचनक्षत्रमर्थः पूर्वो न तथ वामतुलादिनिधः॥ स्वतः पातनी तथ न दैतः वेदोक्तं प्रमेयव॥
 जनादिदिनागता आचार्यवामद्विता। यातयत्यैव वक्ष्यते सुगुणं तस्मादिह ते। यातुमात्रं न भवति यातनीया स न स्येव न ह्युक्तं
 लमात्रं ध्याधिकं मया धननामने। वक्तुं न कलहं ये वदन्ति न यामत्युत्तरी। पूर्वोत्तममहास्वर्नं दक्षिणोत्तमं सौवर्णं॥ लाहिने
 पाथिमे रानी मनेता हन सौवर्णं। मध्यं तातुमि रानी गुणं कुली लपलासनी। कालोत्तमं गच्छ सर्वेषु दानैर्युक्तं सौवर्णं॥ तद्वि
 नीदं न तले सुसीति खेत्तु समाहिनी। वक्तुं पीतं लमं ध्युक्तं मनात्तु कलपिनी॥ वदुथ गकलं ये वदन्ति कालोत्तमं कली किं न तथ दि

[illegible]

यागयागिनीगतेश्वरुवताउमरुसादिहिममहाकिलिकिनायमानानिमलसिद्धिमद्विर्षापुत्रार्थगतभभनमाधु
 सुखा॥७॥ हारुगवासा मोवजवानाहिनायकी। सर्वयागमहावीनावजससुखसुखासुखी ॥७॥ निवीवजवानाहीक
 समहाकुरुमाकुरुमगुलसुखपातनववहसुखहिलरुता॥ साकुमीपटल॥ १७ ॥ अथवजवानाकावजवनमसुख
 नीगत॥ वशिष्ठरुसुखीकारुहिकरुदयायनी॥ वसुधैविषयकालरुहीत्यहिलरुती। यमसुखसुदनीसाउमसुखीवन
 वजुया॥ हादम्भकानमहावजुपाविबलमुतिकानयन। पंचव्यापंचविश्वकुलिरुद्विदनीव्यावजु॥ पूतर्वादनकाष्टप
 जिहकथसीवसयी। नित्यमिहन्दुमासाथनिपिदिनीगथा॥७॥ जिहषवासन॥ कुमासथादहदिमादिउ। दिनमकाद

नयमुमपाइषा गीययतहं नूहं लहृषडासी गहाअनि (१) हं हं रु २ सा हा डं ॥ ६॥ तिप्रहापायामकीमहाभासां नूपिकी ॥ त
र्थषाकुयागिनीनानुअमतेडुयहावेयेत् ॥ तेषूहदयसतैवसर्वविजैविहावयत् ॥ तसुखकनसं नामधनुकवर्तुसना
नूतेनीअरुनप्रतिनेअषपिनालिकीहातयत् ॥ सद्यपकानकीनैवपैवानुहं स्वयंरुता ॥ पिबधुगगतावापिमस्युर्नमधि
कारया ॥ अकारहीनामकीतजअरुनसर्वतुनाप्रयात ॥ तस्माद्यमहूनीहयासम्यक्कहा ॥ अहं ता ॥ वज्रतावीर्यता ॥ तुरेविधेक
नैतैतनी ॥ ७॥ कवाकीममा ॥ तादीहायाधामकोमते ॥ जिगुविकेहावयदडीपना ॥ ततदेनी ॥ हेतम ॥ वरप ॥ पिब
स्यधनवानती ॥ देजानादिया ॥ तस्यारिष्टैतस्यमध्यक ॥ पीत्वाजनामनीयादि ॥ धनापदे ॥ ही ॥ ॥ जन ॥ अरु

अरुहृरुहृतिस्मिन् अरुनामनूपावहृपति ॥ मनतनया ॥ वादिअनूकडाहृ ॥ निपापनपूत्र ॥ १३ ॥ तदिपूर्वसमप्रभात
वामदक्षितमध्यकी ॥ आयामवनतारुवपनयमरुनीमनी ॥ हृणीपकृदयहं सअवहृनीवयपदी ॥ १४ ॥ ववहृप्रकातातुलकये
हृवृदिमान ॥ कीवहृनाउमूकनदानपानामितादिकी ॥ वानाहीपूजनैरुखावीनातनुकतावनी ॥ यायमस्यथयसम्यक
नष्वेदापयेरुत ॥ अथात ॥ संपवका ॥ निवजावार्यविधीयत ॥ विनीततामुसर्वसखरुयप्रदथा ॥ मनुकतुपुयागसकपो
लुमीमुयाविदहा ॥ माधूर्यवाकीसर्वषसर्वसखषपूजवत् ॥ दानादिहिनतातिर्यथागध्यानाहितस्यनहा ॥ सत्यवादीअहिहा
वकान्ताहिगवहसा ॥ समताविरुमूडाउसखानीताथरुनके ॥ सखासयविहोषवअनाथननुवाधव ॥ १५ ॥ त्रियदहृ

सुप्रियदर्शनं नृपवान्। अतिथकार्थं तत्तुह्यसूतवाक् गुणदधि॥ पी० सवासदातिर्यं आनर्नमः ॥ १५ ॥
सोमं प्रकृतिमाधर्मं ज्ञेयं वशं निष्कृतं का ॥ १६ ॥ नृपसूतं नृपसूतं नृपसूतं नृपसूतं ॥ १७ ॥
उपनयनं नृपसूतं ॥ १८ ॥ विनाशं नृपसूतं ॥ १९ ॥ नृपसूतं नृपसूतं ॥ २० ॥
नृपसूतं नृपसूतं ॥ २१ ॥ नृपसूतं नृपसूतं ॥ २२ ॥ नृपसूतं नृपसूतं ॥ २३ ॥
नृपसूतं नृपसूतं ॥ २४ ॥ नृपसूतं नृपसूतं ॥ २५ ॥ नृपसूतं नृपसूतं ॥ २६ ॥
नृपसूतं नृपसूतं ॥ २७ ॥ नृपसूतं नृपसूतं ॥ २८ ॥ नृपसूतं नृपसूतं ॥ २९ ॥
नृपसूतं नृपसूतं ॥ ३० ॥ नृपसूतं नृपसूतं ॥ ३१ ॥ नृपसूतं नृपसूतं ॥ ३२ ॥

१५

द्विकथयादहर्तुः ॥ १ ॥ नृपसूतं नृपसूतं ॥ २ ॥ नृपसूतं नृपसूतं ॥ ३ ॥
विधिं। दनयिष्यामि ॥ ४ ॥ नृपसूतं नृपसूतं ॥ ५ ॥ नृपसूतं नृपसूतं ॥ ६ ॥
गुणपूजा तथा भेदी ॥ ७ ॥ नृपसूतं नृपसूतं ॥ ८ ॥ नृपसूतं नृपसूतं ॥ ९ ॥
गी ॥ १० ॥ नृपसूतं नृपसूतं ॥ ११ ॥ नृपसूतं नृपसूतं ॥ १२ ॥
सय ॥ १३ ॥ नृपसूतं नृपसूतं ॥ १४ ॥ नृपसूतं नृपसूतं ॥ १५ ॥
नृपसूतं नृपसूतं ॥ १६ ॥ नृपसूतं नृपसूतं ॥ १७ ॥ नृपसूतं नृपसूतं ॥ १८ ॥
नृपसूतं नृपसूतं ॥ १९ ॥ नृपसूतं नृपसूतं ॥ २० ॥ नृपसूतं नृपसूतं ॥ २१ ॥
नृपसूतं नृपसूतं ॥ २२ ॥ नृपसूतं नृपसूतं ॥ २३ ॥ नृपसूतं नृपसूतं ॥ २४ ॥

अथ कान्तसंगच्छदकमसहस्येयतं । पूर्वजन्मादिपापस्य तिरवायमगुलदर्शनी ॥ कस्त्रीहाठं किं पुनः ॥ दण्डं निदकम् न
समयादकपथं च मगुलपुष्पकपनी ॥ यद्यत्पुष्पपातनकुतलसूतं रुविष्यात् ॥ उदकमकटवृद्धं न तामोहिषक
पयन्यभागात् ॥ मित्रं ॥ शिष्यं वृक्षे व्याकननमवव ॥ अतहास्यासवेवत्थादिपाकलगासंरवाना ॥ कृत्वा ॥ ३० ॥ अथ विवज्जप
असंयुतं ॥ आचार्यादिष्वकसंपूर्णं दितीये गुकमूलम् ॥ पहाहातेरुती यदुवदुप्युपुनत्तमा ॥ ३१ ॥ तमयी
साविधीयत ॥ दृष्ट्वा प्रतिष्ठासमयं न हस्यालममगुलं ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तं ॥ यैव सौम्यं ॥ अथ ॥ ३२ ॥ दस
मयसं वनं ॥ सर्ववृक्षसंमेषाका आहापत्रमभास्वति ॥ पतिपत्यगुना ॥ गि यत्र नदी रुकि वत्सने ॥ यथावे ॥ यथा

हायमिदं विहा ॥ ननु गुन्दवत्तारुपागता कूदकिती ॥ नानानीकानवमुदी सनानीने ववि (नषत) प्रहर्षिता वददव
पूत ॥ ३४ ॥ अथ पूनयत् ॥ ३५ ॥ अतिष्वकलान्न हन कृत्यामहायमी ॥ अथ मसदुलं जमसदुलं जीविनीयम ॥ अथ व
द्वकलाना वृद्धपूजा स्मिती पुनी ॥ हामेय पूनयत्तु दया संपद्यता न ॥ गतवर्जं गतादया दीनानाथं वृद्धयन्ताय
(आगतपत्रात्) समयावा नतस्यता ॥ हाऊन कृतिर्सीतानवजादिता वनाकुमेशसंमग्न गरीपत्रा सिद्धिर्हवति तान्यपा ॥
॥ ३६ ॥ अथ गवांस्वामी वज्रगाना हीनायकी ॥ सर्ववीन ॥ समाधाग ॥ दज सत्त्व ॥ पन सत्त्व ॥ ॥ ३७ ॥ तिती वज्रगाना हीकस्य
महातनुना ॥ अतिष्वका सति मत्स्यं वनादियज्जग वनापदम ॥ सपदमपटल ॥ ॥ ३८ ॥ अथ गरीपवत्तामि

लवणीस्यपुत्रकाकाकलियागक। तस्मात्पुत्रवतानां उहा नरद्वयमावर्त। दीर्घकालताकनूतं सवयनिककलियागी। पुत्रपु-
 वनसंख्याकर्तुं क० पुनः हा नवावकी ॥ कावृद्धपुत्रकवाधिसंख्याविहीनानुविद्यता। वन्दुवाधनाद्वहै तद्वन्नुवाधिसंवेकः ॥
 कृत्स्ननासं सुरुज नविसंरुद्धवृद्धकना। कन्दवृद्धसहासं धना। पातह वज्रधनं रूधना। वयं सो वडा ममहा म्रमनह
 नाठं सुरुधना। कनूतशवः म्रक सनिकिजपन उग्रानकना। सर्वा म्रकार्यतक्षायवानाकादिमथन्यकना। मथनिहर्वसंख्यपु-
 विनादिसर्वमंगला ॥ सर्वसाकं धूः खूप्यतादिननकाखयी। यमादिकाधष्यपुत्रमथनी पूर्ववासनात् ॥ अथान्यः ही प्रवक्त-
 मियखावियुगयमालीगशयनविहागमागुहनीयं कस्यनुहायत। म्रखार्विनागसहसातिलकीदपुदमतिव ॥ कृतमानः

३

समाख्यातामनर्षीकल्पनायत। कृतकद्वयासंधि नक्षोसहस्रमवव ॥ दादनातिवलकातिषड्वनिससहस्रदीप्तकल्पसमा-
 ख्याताहाहासं मुविनकतथ्युक्तहापनयासन्धिसहस्रषादधीयत। वहुषष्टिसहस्राति म्रखोत्रकातिदापन। पण्डितासुर्व-
 नांमुषदापनेकल्पसंख्याया। दापनकलिसंधिथवत्तानिसहस्रमवव ॥ दाजिगमसहस्रातिसखानिलरुविधीयत। कनिक-
 नयासंधिथवत्तानिसहस्रमरुने ॥ उतर्षीयगमाख्यातासिद्धतागुर्सेनयश। कथयिष्यामिगनाथवत्तानिदीपकावनात्। पूर्व-
 दहउरुनकलोम्रपवलाजनिमवव। उतर्षीयदीपावरुलरुजिबवस्तिता॥ कीद्वीपगुरुतासिद्धिरुमीविधीयताउभ-
 दापसहस्रकल्पपुत्रतीर्थरुतादयी। कीद्वीपससाधनकामनासिद्धिमाकृतव। उतर्षीदीपमाख्याउपूर्ववृद्धनरुषिता ॥

दा

[illegible]

दयासर्गानहकानादिसवकुवान्। उभयदिधनायाश्चपवनान्सर्वमेतवान्। सनूयहलात्मकेवनहसायात्मकस्यनाम्। स्वरावधर्म
नेनात्मीसंपूर्णयागवाहिनी। ब्रह्मपूगत्तनेनात्मीकस्यनाशालकर्मभाते॥ नकोनपत्ययात्मीवसंवाहापगनर्ममके॥ पुनर्वादम
खिलैहानाहतेषामया॥ नकविदस्मिन्मयस्मात्कैकानकैकथा। नेरावपत्यनूयववम्भुमाहुस्त्रूपकै। गीहन्कैपुवन्द
नारावनासर्वज्ञपूमा॥ हृदिस्तूर्याक्रमध्वस्तानवीरैस्वेयंकुर्वी। अर्विनस्ययत्रानावेष्टुमाकाशपूत्रिनै। हानडाकिनीनूपितीउ
शालरुष्यदवनी। गगलीकुरुनमध्वस्तैस्त्वष्टीरुगकः॥ पर्वी। पूरुहत्वाः मृतायेथसोमस्तूर्यादितात्मजा। पापादिदमनीह
त्वाकनूभायामनस्मन्नम्। नूयतावस्वराववयागगुह्याविलावयै। पर्वीवीरुस्वरावकुकूपगमनीतिनिर्दिष्टान्। हउवजधनप

ת

मनाथमहमगुलवर्जगीतिधनिः कामसिंहवाङ्मनासम्पुपः नडआ नगजादिमरुनाम्मनरुणविभ्रसिअममकाममकु
 तिमनाअसहसदरुड। नमनममाः वरुहनाः सहजानुअननवाः। सरुनाअपनदपुआः रुयडुमिसन्नकरुअ
 काननसहधम्महर्तुमिः कअअमिसहसुनअनगाः। कामरुम्माः पनमाषाः क्रिमनुमिसमनाअहताः॥
 ०० दीगीतातिनाधनपवूर्धहनुकः स्वर्गः॥ उआः कायवाङ्किरुवज्जह्नुदस्साहा॥ उआनरीः दमकुमटित्वाकानयोगवान्।
 मटित्वा मरुहनात्मासर्ववीनथयागवान्। रुनर्वकालनाजीववज्जकर्तृकासूर्याः पत्रितापुवधकर्तृकायैरुहनिकाइ
 हर्द्विकैपितसफ्रति। रुजाः स्नातुसफ्रदेगातिनर्तववउर्मवी। रुटामेकटधर्तृवीविचवजाह्वैदकी। मरुदष्टोकनात्मा

वावसंयतः सदा ॥ पीतनककमनकुसैपातुहंगसन्निगता ॥ डसकनालहीषतासव्याः वयनवसदधहजगदवकीयवभाः
 नानाखयथाकमान् । दक्षिणवर्मद्विहसुष्यानिमडातथापनात् । वजाहिदूकजिगूलैवदक्षिणायथाकमान् । पदगुकर्हिवाती
 वधूलैरिन्नकुसुमैः । यजुजमनकुसिकावदपुत्ररिपिपालेकी । मूलेकाहलदपुकावमगुताः गदिगहथाः काकपेकीकी
 विकोवम्रगिकुलीउपवर्ती ॥ लगुजदपदीवात् । गुरुपातिमुदुदुसी । मूकः मादुनिगतकुतः ॥ १ ॥ कवंधा
 काहमेतैगहैरवानूपकुजमान् । वामयधधनैमीलेमूलैपातकपालकी । धनूखधगिगुलैवदक्षिणायथाकमान् ।
 ममानधूलिका । हाकपुकापुवमलैपितकीवजानिका । मादनीविनिकाहीवगहाहानममुवैकातमाहकावैवजु

१७

कुकीकुवर्हिका । नतिथनैकीलककुवीरूपनकपुकी ॥ मूयामुकायनामीवतदावद्विहकात्मकी । ७ वैकुर्मनविहयाहासपति
 कनासुकी । पीवमूडाहनाहनरीषत्प्रायनरूपली । हाकीवमूमालावेवकपूमानोयमानयथा । व्यापुवर्मनिवसनेनामीवः
 लीवगजकी । तस्यापनामहादवीवजवानाहीपूर्ववत् । पुहापायसखादेवमर्वसीधिविगुहात् । नानाग्रीहमूकाकानेऽसः
 विहृजैतीविहावयत् । पट्टमालाकुसर्वषाणिनामीकोनयदुनी । पद्मदलपुपूर्वादिमूकनाहनयथागिनी । वदुर्विगमिसैखा
 नाजकिनायाथषटकी । पूर्वादिउहनाकथजकिनाषट्कतथा । उहनायापश्चिमाहनामायाषट्कपुनः । पश्चिमायादक्षिणार्क
 तपुनाहादिकैकली । दक्षिणायापूर्वाहैवमूपित्याषट्कतथा । जकिनीमूपिकावेववीविकाउपमावनाः । सर्वालिकाः नवहीव

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

यत्तथागमकी॥ उममीशुकीवेवपषदापनमन्थनी॥ रूतिकायभादिकीतीपृथगीनथा॥ उकाकालिकासूर्यसाहीयाघवना
वेवपषदापनमन्थनी॥ वरूनानाविविर्नृवअथवावकुवर्नृका॥ उपरुणनिवाहीवहनीर्यवापिकापनाभाखवनीकूलमाया
मिमीह्मितामकुदीपक॥ रूमीअर्वस्मनीसाहु॥ स्वस्वपीगादिकुजिती॥ कदाविशुमन्खदीगविलागायअगापिव॥ स्वस्व
विज्ञातिरयाथकानयमयथानृविशामुकसर्ववकातीसाधिपमुकानयन॥ प्रहायात्मकाककुलीमात्मकुलीतक॥
॥ प्रकुर्याद्यथापूर्वमानमदिकैवदू॥ जितगासर्ववकु॥ दिगीवबंधामिति॥ अतनगथागतानधिवोस्यनृकैकुर्यादि
वकु॥ निमकुर्नजिवानवसर्वपीवनजामयन्॥ सृगधनेलनवत्कनसमापयन्समापयन्॥ पूनप्रथकनसपुति

मीहापयसदा॥ पश्चादाकहासहंतागवर्कमकुलवर्कपतिमादिप्रवमयन्॥ दहाकर्मकर्मकार्यवतहाजदिकैयावन्॥ अतिती
उमीलयदुजन्ममिह्मितापूर्वधूपैतथादीपैगन्धनेवयमवव॥ सर्वकर्मषनस्यआहामकर्मतापूजयन्॥ देवाअग्नि
मूत्वासर्वपुतिष्ठाकानयन्धधपुतिष्ठात्कुरासीपापमुक्तिमीगत्यकानयन्॥ मदीननूयीनर्धाषेयथालात्तुपूजयन्॥
कनदानदाकित्येनगहुर्दियपुदिकी॥ पुर्दिगुजन्मसाहाधसमाकुर्यात्तानिकी॥ अहिकैदुर्मेतीयार्गतानाइ॥ वायूपदवो
अपुतिष्ठयथादर्वपुतिष्ठाकर्तुहाकती॥ निषास्यापजतमार्द्धकवापूथहुक॥ तिर्विकल्पनूपपुतिष्ठादवसुपनी
दवतालाकपालाथतिष्ठकन्मन्थनैयथा॥ तथावसतिष्ठद्ववपूजसमन्विती॥ ॥०२॥ निआकागवकुपथम॥

जनैधर्वलक्ष्मी। किनुसार्वकर्मिककृपुस्यनकिदुसदहीदुविमपन॥५॥ पयाकनातमीवजावलीवष्टिरी। नवाकव
 दिकादयथकुमशाष्टपमातातथा॥५॥ नकिदुवर्तुलातानीपुक्रपूर्वतनीरुवव। यनुमर्षपोष्टिकीपीरुवउरुनाती। उचाटनम
 हिवागैव अर्द्धवर्तुपश्चिमाननी। विद्वधमानतीकर्मदक्षिभभनकिकाटीकी॥ वय्याहृष्टिजिवेदीवमरुवर्तुकिकाटीकीरु
 हरीमाहनीकर्मनेमस्याननीरुवव। उचाटनधूमवर्तुचरवायव्यातनमवव। कलदायकसितकर्ममाएननीसदादव
 ॥५॥ आसनवर्तुकनूपरहावयव। हंकामाहृष्टियागनदिनुकाकानीविरावयव। मृटिकासूचानयमर्द्धमृटिगादव
 ॥५॥ मकी। स्मृष्टमृपोष्टिकीकृपानुलाकचिरुतमभिकी। वय्याअन्नागविरुतकोधविरुतमाननी। विरुतगोडविह

२३

नाचाटनाहिवागैरुवव। अर्धपादादिकीरुपअग्नीवाहयरुग॥ स्वहृदयीहाहंकानवडासस्त्रीविरावयव॥ ॥५॥
 वायवर्तुद्वितीय॥ ॥अथवाकर्तव्यवर्तुमदितिनामकथ्यनी। पीतवर्तुस्वरावषप्रद्विभयागिनीनामुरुवनीमेय
 थाकमी। सिंधीवापी। रिमृष्टवीगरीमगीमार्ज्विकी। मवीमहिषीरुद्रवगीरुचकीगुवमनी॥ मूखीगर्दवीरुदीवअज्ञा
 की। उडकीकुमान। अनीमूकनीरुनूकीवउपुनीनथा। वसनाकुर्विलापीवअग्नीवहस्यानिका॥ ५॥ नकोकीसाईनीवयागविजा
 लिकुटिका। नकुलोहकी। गुहादुग्धमतिवासिनीपया॥ ५॥ वर्तुयथावर्तुस्ववर्तुकुवापन॥ पुष्टपायांमकादवीउपर्वुदाहवा
 सिनी॥ ॥रुमीवारुमूवेववपहापानमितावसा। पर्वदीपतिवासीवआयुआदिषपूर्ववव। मनीमयाकात्रूपवर्तुस्वरावकमनी।

गतयेका॥ स्वमातुमातागिनीतागीतयोसपुत्रिका॥ पिदुर्मातापितामहीरि॥ पिदुनस्यार्यका॥ इहितापुत्रार्याकु॥ राया
 यारुगिनीपुन॥ स्वपिदुर्गिनीपुत्रीतस्येवदुर्गुता॥ जातायातार्यायापुत्रीवपुत्रस्येवदुर्गुता॥ इहितायातुमातु
 पुत्रस्येवदुर्गुता॥ इहितापुत्रीसमाख्याताषड्विंशतिरुक्तिका॥ नकुवर्गसमाख्याताआयुधादिवपुत्रवर्ग॥ स्वमिदुर्गमाव
 वचद्दीपतिवासिनी॥ मलापकेसमाख्यातापुत्रपायात्मकावकी॥ किंवेकीसदाधषविहयास्वाहं सैदमी॥ वज्रवकादि
 सर्ववज्रनूतामविलासक॥ पूजनेकलनक्षेत्रविहयास्वाहं सैदमी॥ वज्रवजादिसर्ववज्रवामदाकिदीपादिना॥ पद्मव
 र्गजाप्रातिदापयसर्वसंगत॥ धर्यनामाविधेदद्यात्स्वनेनानास्वभव॥ उच्यतेवासनास्वस्वात्पूजनेकनूवज्रक॥ पुन

२५

गगत्यवज्रस्यपूजनेदादलाष्व॥ अथातःसंपवक्ष्यामिअग्निवज्रस्यलक्षणी॥ शान्तनयकनहस्तोपाणीपूर्ववधानयन॥ उं नूप्रयत्ना
 हतिप्रथमाहूतिवदापयत॥ उं नमःसमकवृद्धाताममकस्यभाकिं कनूस्वाहा॥ ततःसमाहितामकीवर्गगच्छेनाहूती॥ ल
 क्यद्विवक्तमगुरुगुरुतपोवक्तुमिर्मिहमपलक्यत॥ वक्तुनकमिहवाहनासर्वसंपादिकाविनी॥ इतिविनामध्यमह्यानि
 निष्पुर्कपासमहला॥ वज्रमिहवासमाहानापुष्टिसिद्धिहितासना॥ कंददुसनिहानि॥ अनूपवेदुयस्यपुष्टानिधुमाविम
 लावीकनागांघागावृद्धिहृत्॥ वंदकाकामतिपुष्टाकुसार्वकापमी॥ पुष्टनागतिहावापिसर्वपापेकुतम्यति॥ वधूकपुष्प
 सीकाहीरवाकसुमरीतिहासफहमउवर्धुहनाथेभ्यर्च्यसेपदी॥ वंदकाकात्पुतामीवमातुगीनीतगन्धवान्॥ कपूनाम

नृपवापूगिनावाधुनिदत्तकृताः। हृषीकेशसमं कुर्यात्सर्वं। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीवृद्धोपमिदीकतदादत्तवपुर्विनी। ताना
 नामसमूहं कुरु किं सर्वं जीतवान् ॥ श्रीखंदजं श्रीपंकजं कुरुता यज्ञा श्रीवमाचकी। ॐ देवकृषीखंदजं कुरुमिव कुरुनायजी।
 सर्वलक्षणं श्रीपूष्यहापायात्मकस्वकी ॥ ॥ उवाधिवृत्ताय स्वाहा ॥ अथ रुद्रस्य ॥ उं वज्रं तनाय स्वाहा ॥ अथ रुद्रस्य ॥ उं
 वज्रं तनाय स्वाहा ॥ उं इन्द्रस्य ॥ उं वज्रं कुरुनाय स्वाहा ॥ श्रीनवकृता ॥ उं सर्वपापदहनवजाय स्वाहा ॥ तिलानी ॥ उं वज्रं प
 रस्वाहा ॥ अथ रुद्रपुलानी ॥ उं सर्वसंपत्तय स्वाहा ॥ दधनस्य ॥ उं वज्राय स्वाहा ॥ इर्वी ॥ उं मृषां गहनवजाय स्वाहा ॥ क
 र्त्तनी ॥ तत्तद्वत्कुरु मलोसतस्वदवतावीजनिष्पन्नविनीवीजपविगते मनुजवर्जविनाशयत् ॥ समयवज्रं हानवत्तथाह

२१

अप्रवर्तय कुरुता ॥ अथ रुद्रं तन्मध्यं कुरुमटिताकारं तु विनाशयत् ॥ प्राकृतवमनादिकं पूजामुक्तिः ॥ अथ पापनुपूजयत् ॥ स्वद
 वतावीजं ज्ञापेत्तहामयदविर्सेकितं ॥ प्रथमं दवर्तदद्यात्तथाप्यष्टया रुद्रया तन्मयसंप्रधिकीयावत्ततस्तदेवमव
 व ॥ उवाच नृपतः ॥ अग्निवर्जं विवर्तयत् ॥ तथैव हि सर्वद्वयं पूजयामाग्निवर्जं दद्यात् ॥ समिद्धं ॥ दिप्रतामगुलरुक्तावमनादिक
 न ॥ कुरुमग्निनसिंहलाधूपीगर्भं दद्यात्तुल्यं पादोपायं ॥ दीपमर्घं त्रिवर्णं वपुर्दद्यात्तथा ॥ कुरुमी ॥ यथापूर्वकं न विधा
 तनविस्तर्जयदग्निवर्जं मृगुर्ल ॥ ताकिकं अग्निवर्जं संपूर्णं ताकाकुरुतामययति ॥ दितेव लोकिकमग्निवर्जं गजोलाकाहर्न
 तथा ॥ वागादीकस्य संपूर्णं वाद्यमानं विनाशयत् ॥ किल कीलीमहेत्ताहं गीतं नृपसखात्सेहं ॥ कालमूर्खीदवीयागन

जपानी वसुवर्षी वरु ४ सुनानिहादहा ४ ७ वीषाड राविहया नूननी वविवरु १०॥ हानविहानसुला वलात ॥ १॥ नरागवसु ये ॥
 ४० मीनिर्मातवजुषु ययका (१०) नामन ४॥ अतसुर्वमिदपथवजुषु ययकथय ॥ तानासिद्धिप्रदामनुना गवर्षीरुहादयी ॥
 ३ नमः ॥ १॥ तन्महाकागातूनाया ॥ तयथा ॥ ३ वलपुवललनालयदवर्षीगलाहा ॥ सवायूरीरुहामूर्द्धना ३ सवायूरीरु
 हागावर्षीयवदागवृत्तिपिभुहृदि ॥ ३ वामु (१०) मुकनिविद्युद्धिह न २ पव २ दवदरुमानसलाहा ॥ वामव न १ तल ३
 नकनसुमनूलिखित्वा तस्यास्य कनका (१०) एडो ॥ कागवकुसुयैलिखित्वा मरुपदीलिखित्वा आक्रम्य जप ॥ वनीकन १
 मूरुमी ॥ ३ वजुकाधवलावलहनदरुपवविध्वंभययास्यान्दयमानहृद ॥ वाल्मीकी मयापेवगवसहितयावितु ॥ ३ वी

१००

शुक्तिरुहाकनवीनरुहादकनसुवयकुपुनूधपमविचिनी ३ शुक्लवर्षीदयात्तपाहनादकध्यापाकयानि ॥ यदि नवयानि सप्तमदि
 वसुनखपुल्लुहलायटकप्रतिपत्तयापवाहय ॥ वर्षीनिवर्षीपतयनविधि ॥ ३ गगलप्रविगम ४ लाहा ॥ अतनाप्रकालिग
 मूललाहसपनापेहलाकस्यविद्धि नडा नसुपये ॥ मूलवन्धकनारुवति ॥ ३ मूकानिहृति मूकागवृत्ति मूककाटीनिर्वा
 गरीमूकानी मूकपनिषदादवदरुस्यमूलवन्धनिसाहा ॥ वलीवर्दस्यापतिवद्धयोदिष्टसुपये ॥ यस्यकस्यविकर्ष्यमूलव
 धववहानपतिगसिद्धि ॥ ३ नमः ॥ १॥ नरागवसु ये ॥ ३ वलपुवललनालयदवर्षीगलाहा ॥ सवायूरीरुहामूर्द्धना ३ सवायूरीरु
 हागावर्षीयवदागवृत्तिपिभुहृदि ॥ ३ वामु (१०) मुकनिविद्युद्धिह न २ पव २ दवदरुमानसलाहा ॥ वामव न १ तल ३
 नकनसुमनूलिखित्वा तस्यास्य कनका (१०) एडो ॥ कागवकुसुयैलिखित्वा मरुपदीलिखित्वा आक्रम्य जप ॥ वनीकन १
 मूरुमी ॥ ३ वजुकाधवलावलहनदरुपवविध्वंभययास्यान्दयमानहृद ॥ वाल्मीकी मयापेवगवसहितयावितु ॥ ३ वी

हर्कं रूपयन्ति नृपदवारुवति॥ अथवा विषलवतनाजिकासर्वपमूलवीरुधुनकनवीरुमहाकालवीरुगा॥ ७८॥ तर्षावमुसीया
 यमहिषीसूकनगीमनाभिप्रभलायवकुर्ध्वापिपूषधूपवोतंदयात्यथादृक्तिरुहसुनसंगुवाननतकर्जनाजाधना
 कनमहाकालानूलाय॥ ॥ ८०॥ ॥ ८१॥ ॥ ८२॥ ॥ ८३॥ ॥ ८४॥ ॥ ८५॥ ॥ ८६॥ ॥ ८७॥ ॥ ८८॥ ॥ ८९॥ ॥ ९०॥
 वदागच्छतिपिभुक्तद्वि॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥
 नृतिवित्ताहस्याहकनका॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥
 ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

१०१

बागुकिंरुत्ताकनवीनववुर्विहानिकुपयत॥ नीमाषाकानवधरुगारुवति॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥
 मनुपागीयसुतपुकिपदधिवितन्धति॥ कोनरुपयमक॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥
 गानिनिशनाय॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥
 नार्गितामयति॥ वलामूलैसपुवपुंरुत्ताहसुवद्धाहनीनामयति॥ अपामार्गमूलवद्धावुपेहनीनामयति॥ सपपवृकोर्ह
 गहीत्ताहानमूलमार्गवाधनयस्यदीपितम्यति॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥
 अपवाक्कनाअन्यववाक्कजुक्थन॥ नकमैत्रिकवर्धुवुषर्हि॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

रुद्र रुद्र रुद्र उच्चाटय ग॥ अर्पति ग॥ मय न प्रकृतिं कृत्वा पाठनां गुलं कानय न॥ भ॥ न कर्प दनामलि वीत
 दृढ नैपति प्यक नाम (७) न न मूर्त्त कृद्वी उय न। मृत क॥ मय व द्रय न॥ न मूर्त्त स पूरु फ न मूर्त्त ल त य ह ना न।
 कृद्वी दद्या नृ ना र व नि॥ म व नि ला यी वा म रु रु पे रु नी का लि ति स्त्रा दी प नि स्त्रा दी य न व स वि द्या वा य व का रे
 (८) म तु ल म्प ति ग्य रु र्ज प रु द व द रु स ना मी लि ति स्त्रा रु क पि रु म (९) अ प रि प्य द ही को क द द्या श्र ति म् उच्चा ट य
 ॥ की र का न रु रु व रु ता म् न रु रु न त्व रु हा धि क स रु र्ज प रि रु प्य उ द क म् (१०) नि र्गु ल्या मी प न रु ३६६६६

पथज्ञासहिभारुवति॥अपननुमानयनुमिच्छति।सिकुकनवापिष्ठकनवाप्रहर्गिहस्तापाषायकर्पहस्ताउपनिवाद्यादकीपनि
रूपततीपनिमूलादात्रत्येवावयोदकतंसगुणैकात्रयत्।नइपनिहर्गिहस्तातमीविदहर्गि॥मनुभकातसाहस्यैरुक्तादवगृहः
रुदलनीमृष्टपथिउपनिवाद्यादकीपनिरूपतिर्ष्वैरुपौपूजयद्वितन्धनि।पैवसर्वपन्धिनाकनीरुक्तादकीनीरुक्तेननाक
नीरुक्तादकीनीरुक्तेलनालाशमजानामगृहअष्टसहस्रैरुद्रयात्।सद्यमपह्मात्रमयानिन्धिर्नद्वर्दयेनि॥रुक्तेनवापन्धि
नमयति।ममनरुस्मतामपानिकर्गिहस्तादकिमिमुखवामपादनकुम्भमूक।मनकुद्धतयस्यतान्नाग्रसहस्रै
रुद्रयात्।सद्यमपमयति।नकनिलपियंगुयुगकानीअष्टसहस्रैरुद्रयात्समलोकागंधरुवति।स्वतनिलस्वततुसम

[illegible]

108

५३

॥ सर्वज्ञानपूजिनसिलपैतिर्हारावति। सहामध्यविवादवनाज्जवाभललाटध्वजयत्सज्ज्याहवति। ककुनलपयत। सुवलाः
रुवति। कन्याध्वनयत्सूरुणारुवति। इक्षुपुत्रवानाजीतीतारिण्यातिषूलपयतनीर्धुपसूयति। सर्वकूटनागणभूमिपुत्र
प्रयत्। स्वस्त्यरुवति। अतुजालीज्ञातहावितीनीपैव गव्यनसहपिवत। गर्हातिष्ठतिपूजवनीरुवति। नकर्मभूतपुलादकनसह
पिवत। नलीप्रभासति। वरुणागणभूमि कलपयचरुनागत्रागयति। विषदेमकालाभूषणालपयतिविचारुवति। तिर्यध्वनय
ति॥ सैहव्याप्ररुवतस्पतिविष्णुवर्शनादिरुहसर्वगहस्यथपनिर्यजतिपनमनकासर्वजनप्रियमोहापीरुवति। अन्यसर्वमि
दंपश्चादोषधीगमनकथयत॥ ॥ इति वाक्त्रकीप्रथमः ॥ ॥ अथ वाक्त्रकाज्जनीकायवज्जुदध्वन॥ षड्विंशत्यलमध्यव्यागि

दो मुर्तिगति तु कानयत्। घटतर्ताववकाती दामायापितत्थे वव॥ गर्तपप्रषदगीती सा मिवका नयन्मुहुं किं तु साम्नादि प्र
 वक्तु रुद्रकल्पयथा जिना॥ तव सर्व विराय कयत् नूपत सहस्रकै। नामा गुत्तद हिन्ना निमा हा कायिकी मकी पीयसा वज्र
 सा या तु या गिनी प्रथमी गती। तथा हा दन विहया सर्वानी पी० प्र पीठ की॥ मजा तु या दती रुमी धात्र का भा दिवा सिनी। वजादिना म
 विहया पूव तु सादि काल की। बीजी श्रीती त था ये वमभा न वासि कथ्यत। दध्वं व प्रथमै र्यै द्वितीयै वा पद ध की॥ रु तीये त्वै
 उ तै वा पि व तु र्थ वा प्य त्वेति ना॥ पंचमै ही षटी षा की षष्टी वा पि रु र्य क नी। सप्तमै ल हि न तु उ द्ध ध क तु म्र ह्म मी। महा न न क पा
 नाथ म्र रूप न क सदा॥ सामाना सा क वृ का थ पा लि जा ता म्नी क था॥ उ म्नी तु ग म्नी रु ति न की व पि भ व की। नाना वज्र न सी

१०५

पात्र या गिनी पी० बीन की। तव नी रु व नी त्वा या पि सा पि म हर्दिका थ पि न र्थे ति सा त्रै दाम हा स मा धि का ज त्म त्। क व र्थ व धा व का
 ना सि न ही ना नु र्त्थ की॥ सप्त का या द ही ना तु णि न र्त्थ का दि तु रु की। उ व म व ति म्। धा पि का न य रु रु जा दि की। नाना व र्त्तु ती ह
 या वा ह र्त्त य स्य स्य तु। त्रि ष्य त्रै म गु ली ता या स वा धि का ज त्म म नी। या द ही रु रु व र्त्त व पु न न पि ता द ही रु ली। सर्व क र्म ति आ नी
 ना नि र्थ म्। त्वा थ द व नी। का थ र्त्त व द स मा रु वा वि प्र म्र द य स्य ना॥ न स मा हा य रु व जी न सा य न र्त्त रु र्त्त वि र्थि॥ अ थ न य म
 र्त्त व र्त्त न सा य न वि धा रु मी य न वि हा न ना रु र्त्त ता नि मो या य ल रु र्त्त॥ साम सि रु क क रु नी रु ष क पी त र्त्त द नी। पृ थ क्थ क
 ना न र्त्त रु ना म न र्त्त र्त्त॥ प्र ष र्त्त व क ला स्य ना म ध मा जा नि र्त्त रु व धा॥ सामाना मु रु व ही न रु रु रु न र्त्त वि व र्त्त यत्। न क व र्त्त

रुडीगीरुपुपकनरुसना॥ दानिकासिधकमीयासुगन्धरुपुतानका। तस्यापुष्पपुनसुस्यासर्वातिमनसिद्धिदी॥ शुक्रपुनसुपु
 यां पादपुनसुननादिहत्। अथकागुहावगुहसुटिकसीनिर्त। पुनसुसमितमनसि॥ स्यात्तुगुहकमुनीगुह॥ हतसुवलसु
 हरेषकसीगहवनी। कीनादिरुगनासुनपीतवदुनसुगह॥ गीर्षडीनालिकात्पातेमीसडीवनिधायनी। उरुमीगीर्षडीसुपि
 मधुमीनालिकारुवी॥ अधर्ममानुसुयकनसायनविधालुमी। वपुषषुहिरुचुडैमुनसुसर्वलरुगथा। व्याधिप्रिसगना
 तेत्याहपुष्पकानिकानती। वगु॥ समारुवनिर्णयपुषसर्वगसदा। वीडवनिपातवैवीडववनिपाति। सूर्यसूर्यतपा
 नसुसूर्यातदुगिगालुनि॥ उतदुसुसमायाधनसुदयाचतिल्यग। घञासुरुगथागतआयुर्वर्धतिसर्वदा॥ वामनसु

१०८

पुनननपनिगुहनकर्म॥ जीवनिनडीसर्वगुपुपुनसुगमियथा॥ निर्वीरुतपीतहनितीमलामलविवर्जिती। शुक्रअगुरुवयउवउ
 दाषविवर्जिती। पुननीनिर्मलीखडुकिविसुटिकसीरुवी। शुक्रसुटिकरुवदवैपिगुवधनमुरुमी। मत्स्यमात्स्यगथापानी
 सीगविवर्जिती। धीनाविनीन॥ सुगुपीखदहपनिपोलयत। साद्विनिषीसमायुकीगुहाकसुपवैयत। दवतागाधतीकार्य
 अनिवलिसुमन्विती। स्वाधिदवतयागतअविद्धिनमुरुगोपिती। दानपुषुहनीकार्यनिषीसकाघकानेयत। निर्मातसु
 नसीपापिनिष्ठचनिविप्रीकती। सुखमासनसीपापुमोतीरुत्तासुवृद्धिमान्। खदहीसाधयसुम्यकसुपुवलात्रिव॥ तनयथा
 सुवयकर्मदनवर्षादितावत॥ वर्षदयवसीनरु॥ सिद्धिकानसुधीसदा॥ हादमीसिद्धिसीपापुवलिपलितवर्जिती। नाना

नागविनिर्मुक्तं शिवदात्र उता नकी। दवास्त्रममृष्यातीमु। तीरुवगिवन्नरुश। पव ७ वहिवमुतीतिर्यगाधरुह रुयस्सदा ॥ ७ न कर्म
 सीपूतूमिच्छुमिद्धिपवर्हत्। कामाधनसमंदहैववगोसिद्धिमाप्रयात्। वृद्धीगोनष्टकालगुनिगुकी। वापुवगुकेभीयूदूनपठ
 तिर्यासकमुनीवदनाचिन्ते ॥ ७ कानयनियः स्वाहं यववाल समन्विगध। सर्वनागविनिर्मुक्तं निविषसात्सकादिमाने ॥ ७
 लावदनास्यनीवृत्तीनीतलमासह। कमुपार्थपिवद्वर्षसीरुवदु रुमानुजा ॥ ७ रुलावदनवृत्तीकमुनीसहसवयत्ता। प्र
 भासमात्रसीसवीदीर्घायः ७ स्वात्स नूपवान्। कमुनीजिरुलायूकीपावा। मातुसीहिती। यः पीवत्सतर्पीनी सरुवन्निनता
 ॥ ७ वदुन्निद्रुमायायप्र मासीरुधननशायरुस्य कायतसिद्धिनिष्पिताना ७ सीनय ॥ ७ सर्वजियावीनावजयागि

१०८

नीरुलाहवा ॥ निर्मलकायमविलेयागिनीविधिहावना ॥ ७ ॥ निशीवजवानाहिकत्यजिकायात्मकमहातं प्रयागनसायनवि
 धि ॥ ॥ अथ वजवाना कामुपूजीरुत्वायथाविधि ॥ ७ ॥ सोधकप्रवक्ष्यामिमूजादवगुनस्वयं ॥ वीविकावतथा नामाजकि
 नीनूपिलीवतशपनाद्वानवर्हिनीयागिनीषट्पनासुथा ॥ वामहस्तं मातु दक्षयथागरुदिकीविविधमेकस्वतुवीनाथः
 विविधार्थकी। कथागतं वजसूर्यमालालिकपनमाथकी ॥ हनूकवामहस्तं विसृष्टयागीविदश ॥ नावनामामकीताभापा
 ७ नावननामिका ॥ वज्रधात्री श्रीरुवाषघानमितासुथा ॥ ७ ॥ विविधैह्यातुवीनासर्वजगत्पदी ॥ कृतिगर्हादिकीन
 तथाजकादिनायकी ॥ का ७ ॥ हृद्गगादवी श्रीगुलीषुतथागनी ॥ पुष्कसत्तथादवीतलहस्त तथागनी ॥ नखतुगुकी तथा

गीनी कृष्ण नमः पाणिनी । अग्रह सुखमय नुगुच्छ विसर्जय दधः । धाय स्वाधिपतिर्विदु नस्य नस्येवल कथयत ॥ सनातन प्रथा गन
 को नित्यं नमिष्यते ॥ रुक्म साक न के लब्ध्या सम नित्यं नमः । सगृह नुमदा मूजा ससुखा सर्वका नशी । नाद्रोका रागि सुखा मूजा ह
 नासाय सकृत् ॥ रुक्म यित्वा विषयं वसुधादयं वनूपि कै । की नी ख नख मृग नु कसु म विदु वीरु की । अर्चक नाहु या गिनी शिख
 न पृ न पृ ससु मनी ॥ काद पुष्प गतं विहं माता संविध नूपकी । सम नखा स्वाद तं व की यत ना न सी यथ ॥ ललना सख साम
 पथी गतं वीरु मना रुनी । गला लव सदा मूजा लयत वी नक्ष मया ॥ पविता गिवा धियुक्तं सा तं दध ॥ साधक ॥ ना न्या पायः
 ॥ न सा गति मूदि मया विना ॥ या गिनी गत पथा उ सना रु की महाय सी ॥ सफुर्जि नख सा वक्ष मकु रू गतु साधकी ॥ ३ ॥

मकुहानिविहस्यसुनमिकवागहीनियते हैं हैं हैं हैं रुद्र रुद्र स्वाहा हाहा ॥ उँ वँ व ऊ वा ना हिय हैं रुद्र स्वाहा ॥ ७ वीमदुना ज्ञान
विनरुता नरु विष्णुनि । अष्टि संहानक ना तु द्द पद मूडा हना ॥ पहा पाया मिना दवी वरु सै सुन पूर्व को । पति मूडा सर्व ह
हिन दान व्या अहि हया । अहा तथा महा मूडा सिद्धा हि वागिनी पुन ॥ नमकादि दुगमने का उवा ना दिमा दिता । ना ना गम धे ना वी ना
सं पक्ष पदा पयन । गुन्य सा दना वा सिद्ध सत्य या कुमा विद्धा । आत्म ना सिद्धि ला वषु जीय न ना न्यथा वव ॥ न सु सा दना मुक्ति
सु विह न ती रुद्र विद्धा ॥ गुन्य पद न ना रुद्र सपी ० वा धि पा न्ति की ॥ विह न ती रुद्र मका नी पु नि रुद्र मा सु नू पकी ॥ अथ वा सर्व गु
न ॥ गुन्य वा सर्व सर्व को । नाम्ना यव महा हाने वा कथा नी न गवनी । काय वक महा सिद्धि सर्व पा न न्स्वावही ॥ नमो स्तोत्र्य ७

वडैलाकहनमामिनिनैधूपजायक। मारुनवकिपौवैरुकाकाभषः दीवव। वानाकाचकन। यागद्वीमध्यमयसुथा॥ कालुखैक
 स्यवताहुक। पनमार्थ। गवने। लिमानैमहाया। गविहारी। शकर्मनै। गमनासर्वसंधीषरुनासर्वमहान्मनी। कपालसंपूर्णवेधक
 मोहमैविधीयत॥ ७॥ तुसुसमाख्यातैसमयंयतिपात्यत। यागिनीपूजय। त्रिहंसासमानैदितादिता॥ ८॥ वैकनमुमकुहः १ सर्व
 सिद्धिप्रदायक॥ गमासुनयाताश्वामरुसुतहामयत। सर्वदवसतकुरुतागादिदितासह। वृद्धापिवदमाभ्यागिनिपि
 नः १ इदमानुषाभितिहीवतैदककावैस्वदहाहर्तकथा॥ नोमामयाकहामनसर्वलाकवसानयत। नरुसनायामकनकुका
 मृगा। ताजनी॥ सैयूकेमानुषे १ क। मो १ सयमार्कतपनी। स्वकायापुनमृजीपूस्वक। मो १ हामयद्वधानिस्वकावैगिनिपिपसय

१११

विद्वत्पवीयनी। काकपकुरुगहामैधूरुनागिसमाहित॥ कदनेलनसैयूकैसधाघाटनमावती। नवसहस्ररुतिवज्ररिवाभाडाप्रमा
 न्रयात। याहहातिआरुतिमान्मनहाकैवृगथातस्यमासुतयाइद्वैदाविदितभातकथा॥ तातैसायंतयमुसहवकुरुनवत
 रु १ केविंविनाइतसिद्धातनयसैमयश। अनननिवमाविहि १ सिद्धातमदनात्सके १ काविहृतलाका नो १ अर्वदधुतुनव
 ७१ १ उतकुरुनसिद्धिपुकारिहि १ पनितुत। श्रीवज्रवानाहीकल्याणहृत्कसमायागी। वजावार्यपनीकुरु सर्ववीननम
 कृतै। द्विदिदैसर्वलाकषसमयावाननकिनी। ७ वैहामकृतैसिद्धि १ पूर्वकयागयोगित। तथागमुपमाकर्मतकर्मयागे
 विना। सैकाकिहाद। मो १ कर्मवायूवाहनगागतथाहामकुरुनपूषउतयसदिमोलनात्। दिनातिषूमलायाथसर्व

यथाप्रदामही। रूमिलगतिलनेलनपवलादतलापकृत्। तन्निगीरुगावगीविद्वशीसर्वकालेतविविद्वश॥ पाथाकडुकमाहितीअश्वगी
 आनिवतानिव। समरागानिकानिकाजयद्विधिवेवमहाकृषधमूर्करीअपीलातुगतावर्हितलिंगकी॥ ययुमातमिच्छितव
 तयुमातेरुवदिनि। मोघमूसादकनपकालयत्पूर्वपमाती। स्वतपप्रकनैवस्वतगिलेतथापेनी॥ तवनीनेकवीअस्यमूर्लमधु
 नासहीतन॥ पिष्टनाहिलपदलागावन्निगीतपतकि। नरुनीद्वयेसैगकमवामिच्छितसमा॥ प्ररुद्वयेकपितीवयावयुसुद्वयेरु
 नि। रेपीलासपदिवसनिष्पादयदसायती। उवीयागवनी। अष्टसम्यकीअघरापिनीवातनस्यरुलेगदीलासुसुवर्तुड
 सकेनि। यसमायूकीवनीकनतमूरुमी। वज्रवावाहीराप्यमानायययथापिवलित॥ सपुत्रकनततर्जनामवस

१७

रा

वनरुगरुती। यंयंविरुयहिसेगहिसर्वपुदापयत्। तवमुसुवर्तुवरुकरुकीतपातकी। तत्सर्वमात्र्यामकुतहहावापनिपूजय
 त्। अविमानकनकीककीरुलुसाधकी॥ विद्ययासपुत्रमनसैयमननरुत। पष्टपूजविकावैरुवतववतानयथा॥ अतया
 विद्यतसहस्रपुनोदकमाती। उवीयस्ययस्यसुसुतस्यनकनधिअतु। लाविनीसुजवद्वरुपुननूपधामिनी॥ सर्वधामदक
 माकीरुवतनाउसैधाय॥ मुयेद्वकासुनूपातुनाज्ञातीवमदीपिनी। आकर्तयकितासर्वतद्वकाअपि साधकी। सफाहिम
 त्तिनीरुलातिसायीगच्छितसव। सनवतसफाहआगच्छितनसैधाय॥ उवीरुलाहनीसर्वकर्मवजिमनिर्गता। सुयेवयनयाग
 लासिद्यतसतपाजग॥ यतुधातुकासुकीउनालिकासुसुनूपिकाभजूरुमथमहावायूदवतासर्वगामिका॥ वज्रवावा

हीमहादवीयागिनीहानसागना॥ ॥६॥ तिथीवज्जवाहीकस्ययागिनीकनुनाऊहामयकुलरुतपटलसुयाविंशतिथि २३ ॥
 अथपुननप्याहवरागवाचजस्वामीहि॥ सुरुदायागिनीदवीहोयायामिनीषुपवागतथपहावलषविह्यायकुमथगतिसुधा॥
 पुमदितेयागतिहोयागिमूलमकुसुत॥ हातवासासवानासासर्वहिससमायहै। तैसर्वषकर्मषनाहि सवानहापुताता। सुम
 लायोपविष्टस्यसर्वपातदैनर्। रुकुमातीमहाकर्मरुतामूलमकुसुत। दावयितामतीशार्प॥ कस्यम॥ उवकुकी॥ सपुर्णिवा ११४
 मरुतकुलवमानाकुवाधिर्। यावदाकानसादवीनायकीति॥ पायामिकी। कैकानवायविहानैगनाभसातमानमनी। वीजाकुर्न
 रुकुमातीमहाकर्मरुतामूलमकुसुत॥ उमहाहानपिमासैर्गतनेपुतिलावयवहैसाहैहाहट

विरुदासाहटहाहटसाहा॥ उंसुरुडहैहैरुट२साहा॥ एवैमकुसमरुतावर्तुनूपैकुर्मता। तावयैगुक्रम॥ उकुयागममरुसुन
 पका॥ वेतिहामवकरुवापथकुर्मसमानरुगु। यागलरुतापकुहतामकुति॥ सदेवकु॥ यकुवकुप्रवक्रमिसर्वसुहिका
 दयी। पूर्वनूपकुवकुप्रहतामकुमिमियासु। वेनावनपथमकुद्वितीयविन्यसुरुगुरुगीयहैकानदयासैवमउकानके॥ षट्
 गकानकेदयाहैकानैसपुमवकु। अष्टमरुकानकेदयादमीमवसुकावकी॥ द्वादशहैकानैदयावकुर्दे। गीगकानके। पञ्चद
 शरुकानकुपाठ॥ गहैकानैतथा॥ सप्तदशैसुकानैकएकविंशतिविन्यसुगु। विंशमरुकाकानैदयाजुकानैवेकविंश
 वेनावनमकानर्जि॥ गहैविंशमरुपयदकुगो॥ षड्विंशैककानैदयादष्टविंशैमकानके। वसाविंशैववीदयादष्टविंशद

नस्तर्हि विधत्ततथा गतमायतनं बुधा । सखा नीवास हृदा वा क्रमं वा च पश्यति । वासना कृत्य कालं तु तमयनागमं च पश्यति ॥ २७ ॥ एषा हस्त
 गता स्त्वामी वज्रवा नाहि सुखा गतः ॥ सर्वयागिना समायागः ॥ २८ ॥ अथानपुनरपि वदामि पूज्यं कृत्या वज्राक्रान्तं गयं कृतं
 नारुयतां दृष्ट्वा कृतनागकर्म विधितं कृतं वदुर्विनिर्गच्छतः ॥ २९ ॥ अथानपुनरपि वदामि पूज्यं कृत्या वज्राक्रान्तं गयं कृतं
 तुष्टादवकाशायत् । क्रोमाहनीसया गतकां भी सर्वेषु कालकथा समाधिर्नैवाध्वं वदुर्दय समवेष्टिगी । हकाजनादसर्वीग ह
 दि मध्याह्निनापि वायका नाह नलापा । धर्मिना वज्रवायना कृतिमात्रता साने ददत्त दत्तं विनिर्गच्छतः ॥ ३० ॥ कायवाक्चिद्रुधर्मात्माव
 ॥ ३१ ॥ सुप्रादादहीनारि य अतुष्टं विनिर्गच्छतः ॥ ३२ ॥ तस्मै न कंकसा ज्ञाति न कया हयादिका । न काना न वसादवीयका

१७४

यकस्तु गृहिणी ॥ कामधातुः सैपनामा कृत्वा तु कर्मकी । आकाशाद्यवतधर्मो मूकः सर्वविदा कृतात् । स पूजितः सकलमध्यरात्र
 यत्कामकर्मकः ॥ यैर्यमानकर्मति तु कृत्वा गुणं दाहकी । मासतडाहकी वापि तथार्पे वा न कुर्यादिके ॥ विषनाशिका लवणधु
 नाशान्नसामनकः । स्वतर्जना नृधिने ववर्जं लेख्ये यत्नतयमयतु सदा तस्य क्रियत नान्यथा ववः ॥ पूर्वाङ्कका कर्कहाता म
 तु माहो मिमांसा । वेनावतं प्रथमं तु द्वितीयं विधियतः ॥ तृतीयं रुकाने दद्यात्तदद्यात्तं वमवदाद्यं तथा ॥ षष्ठं रुकाने
 ये वरुका ने सप्तमं पुनः । सप्तमं रुकाने वतवमरुका ने तथा ॥ दशमं रुकाने वेवहाद (गहू) काने पुनः ॥ अथा दशमं रुकाने वत
 काने वतुर्द (मन) रुकाने पर्वद (गहू) रुकाने षोडशं वतु ॥ सप्तदशं रुकाने काने वतु ॥ विंशं रुकाने दद्यात् रुकाने वे

۱۴۷۲

युष्मकी। हनुकलखरावजकीरुनालधुये॥ सहनुसर्वरावानीपखयाकर्मतीविइ॥ सनादिषूनलरुमोदर्तनायाविवरुले॥ कर्ह
याद्वयसर्वस्मान्स्मान्सीरुवा॥ आत्ममानववृद्धत्वंतपनासर्वरुकरवा। कदाविलालेव। हीनुकर्मन्यनसिद्धानि॥ नखा
पूर्वकर्मववीकृयिवाविवरुले॥ धनुवीनखरावाउतनुकउहायत। ततमानितमानानेसखध। दुषसेववा। रुपामूयाघयले
मानतीकीयतधुवी। रुपाहीनानसिद्धाकुरुहलाकपत्रजव॥ ॥ नुनिशीवजवानाहीकत्ययागिनीमसमनुनाऊकवमू
लमरुस्यमानकर्मपटल॥ थनुर्विनति॥ २४ ॥ अथउमहिकनर्तपयागीसर्वइर्नह। कथेयागिनीसमासनत्वगतनप
यागरुथवीर्यसीगाध्वधर्महिमासयअसीहिगधनाहिवरुषूम। धपूरावयच्चकनायकी। तनूपमात्मनाहतीतान्वजा

लमा लकी॥ नृत्तिपुं सनवगनहानवायनासह॥ (गर्भ) नृत्तिनाथकनरीह नयागकी कार्य माने सदायागी सिद्धात पनमा रु
 नी॥ नवलनिवायविहानेयावघागीनवकृति॥ नसा नन्धुपा (लेनी) निमध्वतिवालिनी॥ नहिनासादियागनवायमा (॥) नवापा
 न॥ सप्रमनिउमहिउविहानेयायनासह॥ जयाकालगमसावयपप॥ सर्ववन्दुकी॥ सरुवलादहीवन्दुधुना (मे) उहा मयन॥
 पिनामूलैउहातयाउर्द्धस्यवउकगया॥ उर्द्धकर्मपरागनवक्षापरमयत्कतात्॥ नसादीर्घसंवाध्वं कूयो हि स्रष्टु कर्मकी पा
 न॥ उसेवाक्षिपुं वीर्यसंवाधिदर्शनतात्॥ ऊँ कानेनाविकाहाने स्वयं वा न प्रहृषित॥ मावाकनी स्वयं वयस्यात्मा कानपद स्थिती॥
 न॥ नृत्तिनाथकनरीह नयागकी कार्य माने सदायागी सिद्धात पनमा रु
 नी॥ नवलनिवायविहानेयावघागीनवकृति॥ नसा नन्धुपा (लेनी) निमध्वतिवालिनी॥ नहिनासादियागनवायमा (॥) नवापा
 न॥ सप्रमनिउमहिउविहानेयायनासह॥ जयाकालगमसावयपप॥ सर्ववन्दुकी॥ सरुवलादहीवन्दुधुना (मे) उहा मयन॥
 पिनामूलैउहातयाउर्द्धस्यवउकगया॥ उर्द्धकर्मपरागनवक्षापरमयत्कतात्॥ नसादीर्घसंवाध्वं कूयो हि स्रष्टु कर्मकी पा
 न॥ उसेवाक्षिपुं वीर्यसंवाधिदर्शनतात्॥ ऊँ कानेनाविकाहाने स्वयं वा न प्रहृषित॥ मावाकनी स्वयं वयस्यात्मा कानपद स्थिती॥

[illegible]

172

वर्षादि कर्मकै। हरिजातयातयकुलवदरुमिधितै। वलाने सर्वकालरुनामादपुसाद्वैर्य। रुदावाकाज नूपा। नागत्यागति मुसीरु
नै। कमा। शासन कुर्यादुदिवमजीनालयै। स्वयं। रसरावपूजादिसर्वात्मकै विइ॥ वपन नरुवरुस्य सर्वकाले मुवृद्धिमा न
क्रियासर्तालिना न्यस्यपरुवकिरुतीमनात्। गतपद नयै तस्य कर्म। वृद्धरुजकी। यैयैतावस्मेनयागीर्तै वतैरुयधे
ना। यमिर्तैकतकर्म। नान्यैकर्मस्मन्यतः। तुरुतुरुमहावाधिकायत सर्वयकुकी। पतः। पतिनिर्वाती वृद्धत्वाविषतिम
हासरावाक। नतिनागीमयात रुत वसवपूजकवी॥ वाध्वीगपीतिर्जी तव स्वरावनरुसीरुवी। एव अस्मभूय कर्म वृद्धवगा
पद। रुतै। मर्तुसैरुतपूर्वकुहावय वृद्धमध्यक॥ मर्तुसैरुतधर्माभास मूवकिरुदालयै॥ ईकासधमविनूयकरु

120

[illegible]

सेवदापयत। अकारुतीर्यदयास्यमनुनकाजकी। लवययकाजकीदयास्यमसूकाजकी। अस्मभुरुदकाजकीनवनवप्रभु
 काजकी॥ देहाभवेनावनमुगकाजकीकादलायसत। हादलाकाजकीकजयादलाकाजकी। चतुर्दलातवीर्जवर्षवदला
 द्विहंतथा॥ धाउलाकाजकीवसपुदलावेमायनी॥ अस्मादलाकाजकीकजकातवीर्जगयसत। विनामपकाजकीदयाद
 काविर्जयथाकपत्। जयावीर्जकाजकीकजुवुर्वीर्जकाजकीकजुवुर्वीर्जकाजकी॥ हंकाजकीपडिहादयास्यपविर्जयथाकयत्॥ हंकाजकी
 कातविर्जगजकाजकीवदापयत। जिनमसेवदयागुकाजकीवर्कवीर्जकाजकी। हाजिनमहंकाजकीवक्रकाजकीकजपिर्जकाजकीवउ
 सिर्जकाजकीदयाहापयवीर्जमन्यसत्। पडिनामनाकनीउसपुर्जकाजकीद्विहंतथा॥ अस्माजिनयवीर्जकाजकीव

१२९

लोर्जकाजकीकायलाजकीकादयाहंवेकवलाजकीकरुकाजकीहावलाजकीनितुयवलाजकीनामाशचतुवलाजकीहाविर्जव
 लाजकीनामावीसपुवलाजकीनागुगवाहावलाजकीनामा। रुकाजकीपवा। हावलाउयकुमादि। हापवकाकपसाध्यास
 पयागिनाकीवेसहा। मर्दसंदयहथवगउस्यमूवयसत्॥ वानाकागुनामनसिखयकुमहाकपकजवावाहीवि
 गानीयाइहाटनीविवरुगी॥ अयकाधर्ममहागुकीसेहाहीहेवजमानि। अतूवाजिनीमर्दयागीलावनाविनापिसधगु
 नूवाकाकादलाप्यथकीविहमसुधनसमासवपिलागुनूनाधयमहामिहि। तनकुहनलत्यककर्मतावा
 धिसंहव। मरुकपविहाविहाउदययजकारकी। केशसिद्धिविजानीयानाकासपुसिद्धत॥ अस्माहृगवाचद

वा ना का ती न ना य की । सर्व ती न य नी क स्य व ड स त स र ग ल यी ॥ ॥ ॐ ति टी व ड वा ना ही क स्य म हा त कु ना ड म नु व ड
मृ चा ट न क र्म त कु षं विं ड नि प ट ल ॥ २५ ॥ अ न त ४ संप व क मि य कु वि ड व ती त थ ॥ त न व ता ड यू ग ली सो णि
ती व पु या ग त ॥ य त वि हा त मा उ त । कि यं क ल्यं तु हा य न । अ व विं ड स ह आ । ति ल की स पू द भ ति थ ॥ क त मा न स मा त्वा
ता म न षी क ल्य ता य त ॥ सो ना ड स न मा सा र्प ग प वि व र्यं तु गु क की । वा धि र्म न य मा त्रा ति वि ह या गु क का मि का ॥ क त
॥ ॥ ॐ ति टी व ड वा ना ही क स्य म हा त कु ना ड म नु व ड
॥ ॥ ॐ ति टी व ड वा ना ही क स्य म हा त कु ना ड म नु व ड
॥ ॥ ॐ ति टी व ड वा ना ही क स्य म हा त कु ना ड म नु व ड

१२२

न ३ न सो न ॥ न ग ल्या ड क न न षी का ना क न स वि र्ग । वा द ना ति व ल ता ति ष ड व ति व स ह सु की । त न सो न ॥ न मा त्वा ता हा
ग न तु व ड त ॥ त न सो ना ड या सी धि स ह सु ष ड ॥ शी य त ॥ व ड १ ष डि स ह आ ति अ सो न क त सो णि क । पि णि ता स र्व भ नु
पू सा ना ड क ल्य स र्व य या ॥ सो वी न क ति र्म य थ ला नि स ह सु म व व ॥ वा र्णि न । स ह आ ति व ला नि न क स ह सु क । का र्य क त या
सी धि थ व ड ४ ष डि म व व ॥ ७ त षी सो ना ड ष सि ह्य त ना उ सी य ॥ क नि षा मि त ना थ सो ना ड दी प हा व ना । पू र्व वि द ह
उ ह न क न् अ प न ग ज नी उ व व ॥ ७ त षी व ल य दी ग ना सो ना ड ष व व सि ण थ डी व ड १ प ड १ जा त सि धि र्म वि धी य न । उ प
दी प स ज न स प्थ ती र्म स द र्य । सो ना ड दी प स १ प न स र्व म ति या ॥ ॐ ति टी व ड वा ना ही क स्य म हा त कु ना ड म नु व ड

123

नेत्रं त्रयमनायासिना ॥ सर्वापर्वधीनकृतासूयादिसमधातुना । वक्रपूर्वगावाचकाक्षवेकातपैवागकौ । अथान्ययुगमैम
 उन्नतनैवसतवृध ॥ चतुःका (एवैनावनवतुहानवयागिनी ॥ छप्रप्रथमपैकीष्वक्षक्षप्रथमकर्म । क्रतोरुवजसेन
 द्वितीयसप्तकाक्षकै । अक्षमापहाकानैरुगवाविद्यथोकर्म । रुजीयमध्यपा (न्युयुषदापयत । वंदुटक्रतू ३ क्रतिद
 याचतुर्थमध्यमसर्वर्षी । त्यायाउकेकदिनातौदक्षितान्नहानकौ । रुजीयमध्यपा (न्युयुषदापयतौम । ध्यपो (न्यदि
 णिनकव । २३ । २४ । यातयावानाक्षपयत । षष्ठपक्षिष्विह्यावं आनयहूं हूं रुटतथा । रुटतहूं ह्यथोकर्मदापयतसर्व
 मरुकी । सप्तमकाक्षपूर्वाकैहानवपूर्वार्जेनैकमात् । दापयहूं हूं वमरुसर्वमहामही । मध्यमपूर्वकाक्षानितथाहानवतुह

128

सोमकुपदं प्रविष्टं तलकरीयकुवज्जनामपदिर्गतिपटलः ॥ २७ ॥ अथान्यतमं वक्ष्यामि वाही नकुगुक्कका वा नाका
नस्पमातीकथा नकुमादनात् ॥ अथदवीपूजीकृत्वापतिपत्यमवमाह ॥ तावत्सहगवास्वामीयागनकुसमानिय ॥
गुक्ककवक्ष्यामिवज्जनाहिनायकीप्रयाग तथा ॥ यागिनी नकुपमातीवचकाटित्वत्भवत् ॥ वाही कल्पमाख्यातधा
उत्तकाटिसंख्या ॥ सूत्रमयाकुयांनानीवाधिविरुस्यर्शुकी ॥ मदायानस्यपथकृजकमतीतिकटिमयत् ॥ पैंवागलक
काटिश्चपात्रमिना नयमवत् ॥ नानिसर्वातिउक्ता निमूर्तिदातिप्रियायधका नकुविरुवत्तयागीसर्वनीसयावकी ॥ नागना
गीविमिश्रिवनायकीरुगदूपिती ॥ तनेवमवर्तनेयस्यासर्वनीपूर्ववर्यया ॥ सगतेस्यदमनानिवितनयविट्थापिव ॥ नानासूजी

72/3

[illegible]

मेरुतार्ययावद्यावतादिकी। अस्तितीकड नीलयदजवरुमधिष्ठित। पृथग्देव्यगत्वेदीपेतेवयमवत॥ सर्वकर्म
 पृथग्देवमकर्म॥ अथत। देवगिर्मत्वा सर्वपतिष्ठाका नरु। तेषांपुन्यनिमाग एकानयत॥ मृदंगदूष्यतिपाधेय
 भोलाहं दुपूजयत। होतनदानदादि विगतकुर्हिबपूष्टिकी। पृष्टिकुनसोराधिसमागत्या गुणानि॥ त्रिकैहप्रतीया
 गीतानाइश्वरमुपडवी। अपतिष्ठायथादवीपतिष्ठाकडुसकृती॥ मिषासा। धाषताकडुकर्हया गृधहृदु॥ निर्विकः
 ॥ कनूप॥ पतिष्ठादवतस्यती। दवतालाकपासाथिककृतास्वतयदा॥ कथावसीतिकरुदवपूजकवसमावेती॥ ७५
 ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
 ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥

१२८

तानुनाजवर्तुलकतदवतापतिष्ठाविधिप्रकनतीसप्रवैधकिपटल॥ २०॥ अथसर्ववीनायागिनीलिः समाईकृत्वा
 पृथुति। दवदानवसखाती कथं सखीवदायकी॥ यदि सर्वहृतास्तस्रग्निर्मगुहागुही। अथरुगवा-दवीहामीसखपदा
 यकशक्तिवसंनयमदि अपनयगुरुप्रण॥ १॥ दवीमहायै॥ अथावा नाका मनेकधा॥ स्वस्वहामानसानेसत्तानादव
 नायकी॥ सनपताममनासिजिवाधिविरुमरुडवात॥ स्वस्वरावगुणकवश्रुयादामर्मवशकसाक्षुगगुहवीससम
 सीकृत्यमाप्र्यात॥ १॥ दवापवक्रामिहोमकर्मदिलेकती। रुमिभाधितमरुतअग्निकुभुनेकानयत॥ अहं गुलसमान
 ह्यावतहससेहसुकी अष्टीगुलैनिनूयाने कपीगुलपोष्टिकेकथा॥ दानो गुलवनाकृष्टो वतुर्दोना किमववापाठ

नैगुलिक पुनकृतवृहतिमानता अक्षीगुलमापुतदशनाकृतवर्धनी विंशदंगुलमापुतकाशगभानिका ॥ नातिरुवद्वयं प्र
 मातता ॥ कर्मतानून तत्त्वयानेयावविवक्तता अक्षीगुलमापुतकाशगभानिका ॥ नातिरुवद्वयं प्र
 नलकृती ॥ कृष्णवृत्ताणो गुरुरेह तत्त्वयानेयावविवक्तता अक्षीगुलमापुतकाशगभानिका ॥ नातिरुवद्वयं प्र
 न ॥ तदाक वकाकार्ययउष्ट्रपमातता कृष्णमापुतकाशगभानिका ॥ नातिरुवद्वयं प्र
 ॥ मन्त्रसाधन ॥ कृष्णतीवर्गुलकृती ॥ केतुसर्वकर्मिके कृष्णमापुतकाशगभानिका ॥ नातिरुवद्वयं प्र
 ॥ कृष्णमापुतकाशगभानिका ॥ नातिरुवद्वयं प्र

१२८

वक्ता कृष्णवृत्ताणो गुरुरेह तत्त्वयानेयावविवक्तता अक्षीगुलमापुतकाशगभानिका ॥ नातिरुवद्वयं प्र
 कर्ममापुतता नैसदा ॥ असतवर्गुलकर्मनूपतता वथरुदा ॥ कृष्णमापुतकाशगभानिका ॥ नातिरुवद्वयं प्र
 सर्वधुतिनाशनी ॥ तीवर्गुलसमार्गतिने विवदपाणीगुवा ॥ मटिकाम्पानयमर्गुमटिनादवतामर्क ॥ सुहृदपोष्टिक
 कृष्णमापुतकाशगभानिका ॥ वक्ता ननागविहृतजाधविहृतमाननी विहृतयगोदविहृतउवाटनातिवाजक ॥ मर्त्यवद्वय
 कृष्णमापुतकाशगभानिका ॥ मर्त्यवद्वयमिदयागीमर्गुपुलकिलकृती ॥ मर्त्यपाजादिकेष्टयमर्त्यवद्वयहृतथासुहृदीलक
 कृष्णमापुतकाशगभानिका ॥ मर्त्यपाजादिकेष्टयमर्त्यवद्वयहृतथासुहृदीलक

[illegible]

गन्धसङ्कलान्नपुष्पदिवरुणः॥ गुरुगुरुनयवदन्तिमिरुम्पलकयन। वैकुण्ठकम्पिराहालासर्वसंपत्तिकारिणी॥ दिगीषा
मध्यामाह्यातिष्ठकंदसमूहनी। वडुमिषासमाहालापाक्षसिद्धिहेतुसदा॥ कंददन्तसिद्धिहेतुसदा॥ कंददन्तसिद्धिहेतुसदा॥ कंददन्तसिद्धिहेतुसदा॥
राधातिर्धूमविमलावैद्विनामोभेगवद्विहृत्। वंदकाकामलिपुष्पागुसायमीकनकापर्म॥ पृष्पनागानिलयापि सर्वपा
पीतुनधनि। वंदकपृष्पसंकाशकवाकसमसन्निहासपूरुमडवधुर्लसंनधेयर्थेयसंपद। वंदकाकाशलासील
माननीतीतगीधवात्। कर्पूनानूतगन्धिगुरुस्सुनाधिपयन॥ वीतावतसुदीपयनीत्वकाहानसुत॥ अतिगरी
ननिर्वाधाग्निनस्यसुतावरु॥ श्रीवत्सङ्काशनीत्याहुतिगूलकलगाहति॥ धज्यामलसद्वज्रसहिकावगगाहति॥

उत्तामनः। तिलैः पायैः हने विद्याधनार्थं सर्वकैः॥ महाबलकर्मार्थं वज्रायुर्वगपदीयवै। आयुर्वृद्धिकर्मिर्द्वौ। गंधूमागनाग
नैः। प्रहायदमधूनीनैः दध्ने सर्वसंपदी। हस्तार्थं सर्वदा वक्तिः। मूर्त्तिदत्तोऽस्वस्त्यदवता॥। अर्चकर्मन्मूषेत। अयैर्गोत्यादिक
र्महन्॥ पूरुर्हृत्तिर्विज्ञानीयाऽज्जानिष्पत्तिनायकैः॥ हृदियैः सर्वं नृपयिगयक्रियवासनी। नानावाद्यमहाभादीर्गहनै
कनूत्तमदिनैः। महाबलीविराविनातु सर्वपात्तन्यधिपतिं॥ तनउष्टरवत्सिद्धिः सर्वकर्मिकहामयः॥ पाणीशुभौचासूना
पाययः। अथैव हयहावता॥ तताविनिर्गती सर्पिः॥ महाहनामनमनी॥ मनसैः जीउतनउ सर्वलोकगुह्यकुम्भः। यस्मिंका
लरुवदग्निस्मिक्कालप्रवर्तते। साधनानूयहकर्तुं हामाध्यात्मिकदर्शनार्तः। तनसैः गर्पयदग्निमामानी सर्वत्रोवनी॥ ७७

कनामिहाहामेसिद्धिहोतापस्यपदे। साकारनैहान्तुनायीतपमधमा॥ वध्यासवमवाविहंपनमाघसर्वसंधिषाहकयिषा
 कदसैपत्रैवासनीवृद्धिनिर्मनी॥ लकालरुपहालाषकायीदुह ॥ नहंसि। लयेव ॥ यवतुमायादाधपूलकता॥
 ६०॥ विधीवज्जवाभाहीकल्पमहातनुनाह ॥ अगिकुहामविधिपुकातनामाहोविधितिपटल॥ २८॥ अथाभाहमसैवक
 धर्मसनादयी॥ नत्रवज्जपुयागतसिद्धिबवधूतिका। नानासिद्धिपदामकुनाभावपूर्वनादयी॥ नमनियोगिनीसैवक
 नमार्थनिसाहिकुहातनयागतमतिगीद्वयानागुताह ॥ तुहिअ ॥ नपद्मवलायीवक्रमिहीलमादनाशातनानहूयमाती
 गीवादिमागनाह ॥ वजनलैयवीऊहकानमक्षसैयूँ ॥ वहुतवधूतिनाडिडुईमूखातलागी ॥ स्वक ॥ अत्रयद्वी

१३३

कनलकानयतुवृद्धिमान। जनममनलहूनपूवाधिविरुवकीउगी ॥ लंघनीरुवपापवविहवकमयैरुवक। रुगवकगलिगी
 उलादिनवीदिनदिन। नसिंहाल ॥ कुयाह ॥ विपनिगासर्ववमुक ॥ महानागतमात्मासैहवकि ॥ सदात्मना ॥ योगककुस्यहल
 पदमहद्वयगायत ॥ यागिनीककु ॥ कुहसाकुसलायी ॥ रुगतिथय ॥ पद्मवलाववक्रमिधर्मरूपसनादयी ॥ वज्जकायस्यया
 गनसत्यसत्यवदामह ॥ उकाक्रियागगाहनेनत्रवज्जसूपक ॥ नायकीजाकिनीकाकनाययडागवीकिना ॥ बाधिविह
 सदाप्रकी ॥ किहायीवकनषूँ ॥ गवउमूडेवा ॥ कीयासहजबागिलकती ॥ हुगीवदामूखनेवदानथकनयैतक ॥ वलैव
 कयसवाही ॥ मलीगागीसलकती ॥ हामेवसर्वकनेवयैय ॥ वग्मादिकानय ॥ नगावन्दितमाउतागाहनीगुनूवर्लक ॥ ३०

[illegible][illegible]

736

कतीकृतलनाकनौहनाटकतीकृतलनाशयनशानामगहअष्टसहस्रंरुद्रयागसद्यजुपस्मानतमीयति।कनतवानुधिर्नंदुर्दः
यति॥कनतवानुधिर्नतवासीयति।भग्नतहस्यनामपुत्रपतिकर्तिरुवादेति॥हिमखवामपादनाकुम्भमुखमिखतकुम्भ
नयस्यनामाअष्टसहस्रंरुद्रयास्यनमसोहा॥अतवति।स्वततीलखततुल्यताकातीअष्टसहस्रंरुद्रयाग।धनआन्य
समृद्धिरुवति।सर्वषांगुनुरुक्तिर्नकर्म॥इकनवीनपूष्यातिद्वयउतकैतथा॥कष्टद्वयैहनिर्वंदेवदानहनिंदयाभातप
सुनेवपप्रकममवव॥धियैगुमतपूष्यवस्वतसिद्धार्थकैतथा॥निर्गुगुरुतकनीवकमनावाचनरुथा।शिकुडकी
वाननीवीर्जमनगिलमवव।शिरुनासमहागीवउमीलनिवपजकी।हलकनेरुवीर्जवहिगुरुनाटकैतथा॥पर्ववैभक्ति

139

किं हि पूज्यवती हवति । न कलुषं भूतं तुलादकं न सहपिवत् । धूलैः पताम्यनिवद्भूता । गणमसकलपथं न वद्भूता । गीतायति ॥
 विषदीनां कालाश्च भूतानां लपयन्निर्विषाहवति । तिर्ह्यध्वजयेति ॥ सिंहव्याघ्रमरुवतस्य निर्विच्छावर्धनादिति ॥ सर्वगुरुस्य थपः
 त्रित्यङ्गि । पत्रमनका सर्वजनप्रियः शोभायै हवति सर्वदा ॥ राशिनां रोगमध्योषधीनां लवङ्गिकी ॥ मधुर्लभः स तु नामैव नाना
 नागतिवान्ती ॥ ४० ॥ एषा हरुगवाकर्ममूला ॥ सदा हि तृणा ॥ सर्ववीनः रोगमाणाऽप्यधीनी तु नायकी ॥ ४१ ॥ निशीकृजवा
 नाहीकल्पमहाकृदुना रूपमवलाकर्मप्रसन्नाऽप्यधीषकः न ततिर्दष्टाऽनर्हिना गटलम् ॥ २८ ॥ अथ सीसान्तालाकादिस्तु
 कथ्यते वनसायनी ॥ हयगोवप्रयागनसाधयदसलरुही ॥ हकारेयाति मध्ययकां न मसकृत् हिता ॥ गीकार्वापममध्य

उवकारै हृदयप्र॥ धार्यमाने महायोगी सनसती नसायने॥ हनति सर्वभाग सर्वयत्नं च न वर्तते॥ नसायनु सदा लाक सित्या क
 (७) नवावसा॥ हयका मणी वायी नसायना याग (गणकी) गच्छते॥ नवा एत न विद्या न न पूर्विका॥ नसायने कज सत्त्व न मीधव
 विधातुके॥ गगल सत्त्व नितरा नृग बुद्धिवादि नसा॥ वाधितर न न सा वृज्ज भागिनी या गतायेकी॥ सर्वसखष न राजा समा (गण
 पुदरीकी॥ नसाय व सदा लाक हनना गगल हान्धकी॥ हाविना नसा नाथ नुयागिनी वृज्ज मार्गिभा॥ उदय विना धन आर्हाय
 नयागिना मुख जायक विना राय विना गा श्रवि घाया नायकिव॥ अपह न नापि सर्वेषां तैरुदिह ॥ ५॥ यह नसा
 ... पूर्ये न साधवत रुता न॥ नसायत नृपि न न गत्या धूष सत्त्व न कार्य कृती न हा मया गा दे मय ॥ नसाय वष
 नसा

नसायै राजधन वमा प्रयाह॥ गगल भागमा लाक वी देद अकुदाहकी॥ नदा वागत नागी वसवमाने तवाधर॥ नसायने वस कर्म क
 लागुला दिल रुते॥ नसायने न कृती न मध्या माहि तिसा दगाह॥ वाधूष हने यागिनी वृज्ज नादिकी॥ नपूह कान वृह वस स लाकाय
 सैरवाशन सायने विधि वृक्ष नसायत विधा रुम॥ यत विहोत साकुत साविमो या हिल रुती॥ साम सिद्ध क क नु नीरु पक्ष पीत
 वन्दते॥ पृथक् पृथक् मात लाह नाम नदी देव॥ अष्टा पंचक रापना मध्या मी गति सैरु वश॥ सामा या कुीर वही न वृद्ध रुत विव
 र्जयत्॥ रुक्म वरु सुरु जी गुरु पू प रु न रु स मा दानिका सिध क नीय सगी अरु पू क न का ॥ त सा १ पूर्ण पक्ष स सा १ सर्वा हि म
 न सिद्धि दी गु कृ प राप - यो पुन सीरु नादिकुत्॥ आ य ना गु वा य गु द्रु टिक ला ने राध पक्ष सति समित मना हि सा रु द

पुनिपुर्त ॥ हतस्ववनसी प्रहरेषकसंगहं वनी ॥ श्रीगदिराजमास्यनै पीतवदनसंगहं ॥ श्रीर्षजनलिकर्यातै मासुर्षविक्षाघर्त ॥ ३
 रुमं श्रीर्षजै सर्पिमधमं तलिकारुवै ॥ अधमं माससंयुक्तं नसायनविस्मरुमी ॥ वपुषः पाशैरुच्चन्द्रे नृषसर्वलक्ष्मी ॥ व्याधिगि
 मृगताहिस्त्राहृषजै भक्तिकानरी ॥ वरु ॥ माहवनिर्त्यपत्युषसवत्सदा ॥ वन्दे वनकिपातव्यं वदुधनकि ॥ यिना ॥ सूर्यासु
 र्यतपातव्यं सूर्यावहकिनासुनि ॥ ७ ॥ हनुसमायाकं नम्यदयाचनित्य ॥ ८ ॥ घमासहृतयागतआयुर्वदितिसर्वदा ॥ वा
 मतम्यपदाननपत्रिगुदनकर्मता ॥ श्रीवति ॥ श्री ॥ ९ ॥ कपदमनियमा ॥ निर्मज्जपीतहनिर्तमला ॥ १० ॥ तर्जिनी ॥ शुद्ध
 ॥ ११ ॥ रुद्रपुत्रवदुदपिविवर्जिनी ॥ श्रीगविनी ॥ १२ ॥ पुनी ॥ १३ ॥ पत्रिपालय ॥ सादं ॥ रुद्रपुत्रमायुर्गुणरूपप्रवर्णय

१३२

दवगनाधनकार्यं नृनिवलि समन्वितं ॥ साधिवदवतयानिर्त्यविच्छिन्नै मकुशापितं ॥ दातपुत्रं कर्तकार्यं निर्वर्षं सैष ॥ काष
 कानयन ॥ निवलिस्तेन संपाप्नुति छत्रनिर्विघ्निकृतं ॥ सूर्यमासुतसंपाप्नुते शोभं कृतासुवद्विमान् ॥ स्वदहे साधयत्सम्य
 कूपवलोनिव ॥ नतपथासुवयकर्मदतवर्षातिनावन ॥ वर्षद्वयं च सैनं रुद्रसिद्धिकानसुमीसदा ॥ द्वादशसिद्धिर्षा
 न्दवलिपालितवर्जितं ॥ नानागविनिर्मुक्तं श्रीवदावैदतानकी ॥ दवासुनमन्त्राथमुत्तं वनिवन्त्राथपैरुवहिवरु
 नानिर्त्यवाधकुरुकृत्यसदा ॥ १४ ॥ कर्मसंपूर्णमिच्छसिद्धिप्रवर्तन ॥ कामधनसमीदहं ववनीसिद्धिमाप्नुयात् ॥ वृद्धाश्रीन
 द्दकाननुनिगुणीवावल्गुर्ज ॥ १५ ॥ नृपपुत्रियासुकमुनीवदनात्रिनेथा ॥ १६ ॥ दानयनिय ॥ १७ ॥ नैयववनसमन्वितं सव

۷۴۰

[illegible]

वज्रपुष्पाकारैरुक्तपालक। बहुविद्रुपकान्तस्वसंवयकुकात्रयत॥ पाठनाका नरुवयगिनीपत्रमाकुरी। स्मृतस्मृत्य
 वरुवपेविस्मयमधुमकुरी॥ बहुश्रुतदेलंगलाजसायनाकपत्रै प्रवेयागिनीविज्ञानीयाथसैरुवै। यागमातामहाविरुपाय
 नमापदर्शनान्। सप्राज्ञापनित्युल्लसर्वकालधवलिनी। सत्पूतनदादृष्टिनिर्वर्तीरागलेकुरी॥ कुर्यान्पुनरनेनास्मिन्
 कुर्यात्पुनरुवै। उर्वेवकुस्मितायागीमार्गमायातिनिश्चिती॥ पद्मावतसमागम्यसूर्यानापयतत्तकी। नसायनसैरुवाद्यागीक
 र्पकृष्णतादृशी॥ पाठनानीरुक्तानीसूर्यवेवैतमात्रै। कनूत्तमस्यनीयाभद्रकालाकलाकुरी। नतुलवज्रमधुपुर्वि
 यित्वागीहन्तु। सर्वलता। नैरुक्तीनसायनंउजायन॥ अथ। नसायनासहिकानती। मधुर्लहानवजात्यै

182

अमूर्तं श्रीनसागन॥ त्वधुमधुमहानैरुकीनादसागनैरुहै॥ तजाल्पनासनादवीकन्यकाकामनूपिती॥ उदितार्कसमावु
 र्ललाकानससमप्रता॥ नानात्रविविशीगीपयवर्गसमप्रता॥ अस्मादननुजादिव्यामकाभारुवसन्निता। नानात्रसधनादवीकु
 लाकीवसधनती॥ त्वज्जवातांकुलसवाकपालकूलिभाधरी। तथावादी तथायधुनवमकुवनप्रदी॥ रुटकाधनपादीवत्तदी
 गसकमगुलु॥ गूलमृज्जनवीतावगतयकिवाहनेकन॥ उर्वेयोवनसैपनाकिनशासनसैदनी॥ मधुनाप्रदितासर्वनदीरु
 तात्रिमधुना। श्रीनसागननामैववदन्तु। नमधूपमा। सामपातकुलाकन्यादहवज्जवेनावनी॥ वेनावनीदहमधुहन्कीच
 ड्नीरुवतासर्ववीनसमायागजकिनीकालसैमूर्वी॥ उकीरुतानिसर्वातिअमूर्तंनोडनूपिती। हरीकर्तव्यताकावतसगर्ग

183

[illegible]

तनमत्वादकीपापैसिद्धिनाहावकस्ययत्॥प्रहावृद्धिवर्लकस्यलोहापरुलसंपदा।सवाह्यगुलमेचर्यलरुनरुनपदी॥इत्य
 तामूलजायेव(म)पीष्टवमधुजा।रुकाजाथकजायेवयमास्यत्रामदीतल॥साधीपैवविधीपाकैयस्कोहविधास्मताभल
 गीसपविधानैवकुमवाविधानत॥नातादशविधायकमयसेहाप्रवर्हण॥किद्रुतिककारैवमधसिधैवजायत॥अनै
 तवागुकीवनूतीआदीनैतकहावयत्।उर्वीवागवलीदिवीसयासवमदामय॥(म)वर्चमकनुवसकामजातिव॥प्रह
 मकनुनीनस्पष्टिवद्धिमलकातिव।मलयैगालिकाजातेलयतिथवत्कल॥उतानिसमरुगमनिपाकीनप्रकस्ययत्॥
 हार्तिनीसलिलस्यापिगुणस्वाष्टपनेरवत्।जायतमादिनायेवजित्तिर्दिवसविद्यत।पञ्चकैमजिर्वैमथैमरुिषागागकम

१४४

लो।दाडिमैवतथंवागैलवैगमागभानिनी।गुठमकवर्लवेवसपूवादकदापयत्।अ।नवैनीतगधैवजायतस्वच्छनीतली।नर्कना
 सहसैयागमाशार्थकजवृद्धिमान।स्व।गलानलदैवजंतमालीनूतर्हिकीव॥सपूमादित्यतजातिरुतसयासदोरुमी॥मि
 गुप्तसाहुवागयैग्रामलनसमचिरी।अहो।गतप्रदातव्यैवसुसुगविवरुलश।यावयमथूसैवकुततावधैपुदापयत्
 प्रिरुलाकैरुमीनातिभकपूलप्रकागुन॥वागीसुनसर्वातिवधयार्थतयागयत।आममध्यगतसुप्यवकुर्दिनीविः
 (म)षतथायावयित्वाकुमधावीलालवैवमगीरवत्।लोतीनैवकुगीवयसिद्धिवैवगुली॥द्विविधैवकुहितनाहि।जाति
 रुलसमचिरी॥मृगमर्दससमैवेवमदिनावसमैरवत्।पनाईभातकीपूर्वीग्राममलसमचिरी॥सिद्धियायाव(म)

۲۸۵

[illegible]

क० सर्वपापपुण्यमनुगतायुषीतिवर्तुत॥ कामना नवीसिद्धिनिधायिनीरवगुह्य॥ सिद्धिलब्धास्ववित्तविकल्पनेवका
नयत॥ अथप्राप्तवयागतविलसर्वप्रवर्तुत॥ तीर्थिकानां नमस्तस्मै॥ नवापर्वतायत॥ कृतासनापत्रिणकसूतप
पश्चतेदली॥ ४०॥ ह्याहृगवान्दवीत॥ नानासुधागत॥ सर्वमयसमायाग॥ इत्यथसदास्मिता॥ ४१॥ ॥ इतिवीवजवा
नाहीकल्पमहाककुनाजवागुलीनिर्दमपटलकलिगतम॥ ४२॥ अथसिद्धिविधि॥ इत्यथसदास्मिता॥ ४३॥ इतिवीवजवा
कादिप्रयागतसाधयकुवज्जुयी॥ बाधिविहृष्टिनीयत॥ ४४॥ इतिवीवजवा॥ विहृष्टविधि॥ इत्यथसदास्मिता॥ ४५॥ इतिवीवजवा
कालिकानीषभागतवायु॥ तनीयति॥ ४६॥ इत्यथसदास्मिता॥ ४७॥ इतिवीवजवा॥ साहस्यवहृषाभीहेजायतहात

१४५

वरुषा॥ अगस्त्यकर्मनूपैश्वर्यनिदमातसा॥ गत्यागुति॥ वचनाउदियनश्चानुलपयत॥ इतिमातेदन्त्याकार्योदियनसुष
यागत॥ इतिविज्ञानसमाश्रित्यइत्यंरुनितमध्यामा॥ स्पनकम॥ तायससमाधूपनमाकनी॥ पूर्वनिवासानुसृत्यतायततसयोग
यान्॥ अहर्निनीसमैहृषातानीषकत्यभवव॥ षष्ठीपनकुहामानिघटिकातुतिवाजयत॥ वादनीगुलमायामाअसीगुलवेव
माहृति॥ षष्ठीगुलपुमागतनगलाकाहादनीगुल॥ कृमनवमूहृष्टि॥ काहृष्टयतमनामेवा॥ आहृतातुवविहृषानतिहासा
सवानत॥ षष्ठीनैवमितायाहृलकृतीहामकर्म॥ तावयथागित्यादि॥ कासाकालनिवात॥ मगुलाकृतिनीहृषाया
गितालकृतापत॥ विश्वरूपमिदंविहृषगुगच्छतिप्रतिनी॥ स्वरावाप्रातिनेनासीगु॥ नीलग्नयाहृति॥ हामकनाति

၂၄၈

लगातुस्यमन्यथा मपिका कथा ॥ उच्चारनं तथा वक्ष्ये नृत्तं वनदर्पितं ॥ काकपक्षवत्तानि च निर्यासहेलविभूतं ॥ पिना वरुण
त्रिप्रहास्यवायवीदिशितमृगा ॥ उच्चारयनसंदहं संप्रदातुं कर्मणि ॥ विद्वेषकर्ममार्गं तानि च पश्येत्सु मरुवित् ॥ सर्पकीव
कसंमिथं काका नृवगृहनिव ॥ धृङ्गा ग्रेपक्षान् पुरुहास्यगोहनी ॥ विद्विष्ट सर्वलाय ॥ ह्यकीव धृङ्गहृङ्गनी ॥ अथाकर्ष
तीवक्ष्मासासिंधू मसमपुर्त ॥ वायवी सांघदिग्मे स साध्या मा लीयवीवनी ॥ ललिता रुयपी ० सुपा लोका प्रयागतं भर्तृका
नवर्तयत्सु निच्य साध्या हृदी पृष्ठं ॥ याषिता म नूक विध्वं लाक व समानेयत् ॥ एकस्वदुकपालं वानि वलीवान्
(॥) हर्तनी ॥ लख साध्या नी नै वा क व वी नै हा मयत् ॥ साध्या नाम समुद्राय नृधिनं ला श धृङ्ग न काष्ठ मववा हृङ्ग

विवर्तयस्मरुविध्यासाधुहदीवृक्षयाचितमनूकविधुतेलाकवसमानयत्। एकखण्डुकपालीवातिवृतीवान्। अतर्नी॥ सख
 साध्यामनीनीवाकशीनीहामयलुपा॥ साध्यानामसमूचाप्यनूधितमलाशुधुनकाष्टमवव॥ हृदीगभवनसुनकंतलखयत्सा
 धनूपकी। वधुनाकृषसाध्यापिमकुडकाइहातिव। उकेकपूषासीगकमकुसाध्यापिविगही॥ सफदिनीहामयमनसिनी
 तीथा॥ अथाप्यनूनीवक्रामिनकवदतकाष्टकी॥ प्रमाकृतिरुगोवसनकनावननय। नमति साध्यालनीवहदयसुपये
 रुपा॥ अर्द्धनायमिमिपिनीतदाकर्षयति ततः। उिककुदत। तितनीगिताससूचीदुविधुत॥ साध्यासदयनाहोगुधुवि
 ध्यासुनयलुपा॥ सुवृत्तिगोत्रिकागमालित्यनस्य। नि॥ मरुहनाष्टनीरुपत्। यस्यानाममृचार्यरुपमकुतकुत्त॥

१४८

ह। दवागवृत्तिउडु। कयुसीगकसवव॥ मालित्यन॥ त। कपकललितिलिखड्डवातायनकिपत्॥ उचाटनलकरीवापि
 वाननाहिमयीकिला। कर्षसाहुलसकाहिमक्रि। कृषाय। वानाखकनतिखनलस्यगजकुदरुवति॥ गहस्यथखभास
 महिषातसुनतिखनदिनागारुवति॥ अपतितयतवकुगकननतेसनकईलीपाटयत्॥ नागमन्त्रिकासमतहाल
 यत्। हृदयमकुमालिका। पल्लुवतुर्दन्धाविभाषतः। अर्जयदीननकस्यसर्वजकिनिपेयति। उंरुतलीगसाहा॥
 वसवमार्जनमकु॥ ककुपस्यवस्यममादायहकिनहिगहीलोगहधूपयहापयत्॥ एतनपुनमीयानिमूददग्मपितिः
 श्रुती॥ उंउदकतसमागतउदकतसीरवा॥ कषीवगुणपरीवकु। उवधुतिमसोमहावल॥ महीकाकुन्दुपानायव॥

वाङ्मयसमागच्छति॥सूर्यादयस्तत्समकुर्वन्तुपुण्यथलाहकं तथा॥गच्छमकवालेव विंशतिवाममवव।उपचतुर्विदिकुकिपत्तम।
 कतिवानती।कृत्वातुसूखीरवतिमातवाथसमकृत्॥सूखनलरुमकुर्वापवातुरुनैरुयत्॥७वीयागवलीपूर्वसर्वथ
 (गषूवाहमी।तावहातकमखिलैरुनतपत्रिवर्जितै।सर्वतावानतावक॥सर्वयागयागवान॥सर्वमकुसमायागान्तरुज
 यागवर्तते॥अथवक्ष्येपुनित्वायीमकुतकुपुसामली॥यागिनीतकुमायषसर्वायक॥अदिहि॥अहनीयैसदावाय
 कर्तव्येयथा न्य॥लाकावन्धननरुयसहावजनिती॥यतिनकुपथगुर्धयतिमाव।वातकषूच।स्वीजीवाकृत्॥
 कुर्येयस्मिका ननुयामला।सर्वसंपत्तिजामतात्॥विनापिचतुष्पनातिमोपतिष्ठिता॥संनियैरवकृत्माकर्तव्याद

१४८

यथागवित्॥मोक्तमूल्याहिकीकाना।मिहसूखमहामूर्त्वी।यागिनीनतिमान्दृष्टदाहगषूवाययत्।मकुलीययथावापि स
 विरुसपुलपयत्।पैवामततदयातिमिगीरुतषूदापयत्।मकुर्नैरुपयकीमान्दयालयैर्मनुजैस्मह।समकृद
 याधर्मादयो न समानिव॥विहानकल्लनषमकुर्त्वाकमातिव।यकाकनसमासायवैकावैरुजवागहिक्ता।व
 कानादिपुतिहोचतुनाकनादिकैस्मता॥गुतमकस्मिमकुर्थसैकनाकनमकुका॥समयैयतगवाहूयापुतिष्ठीयका
 नयदुध॥सर्वतथागतपदधर्मधुसमानेका॥जायवाक्रिरुपदवयागिनीनायकीविउ॥हगेषपैवगकुली
 क्रियादिनिनिगुरुनै॥विजहानवमवैवयागिनादिपुतिष्ठिता॥सत्यावकाननीकृत्वापुतिष्ठीयवैवगकुली॥स

शयमाकथागिनामकुदयप्रतिष्ठिता। कर्मकिंमदर्थे ॥ केतुगुसवदिकी। स्वयंवचमहाहर्तस्वयंवचामदवना॥ स्वयंव
 यमयैकर्मसादव्याप्रतिष्ठास्यत॥ अथैवपुनरुक्तं पयासर्वतुक॥ विगुडिं सर्वज्ञानस्य मगुलसादिदवत॥ द्विगुडि
 मूल्यावेव तज्ज्ञापैविगुडि॥ अस्यानौगुडिहावत्सर्गसर्वाधिषाउता॥ सपदमनात्वा॥ नतिवर्तिपाइकाशसर्वावनल
 रुवेष्विगुडिं हस्तुट्टवत्। मूलमहादिगुडिं वसर्वयानार्थस्त्वकी। वज्रपद्मादिगुनान्मगुलकस्यस्त्वकी॥ मगुलगुडि
 सर्ववधर्मसंगतस्त्वकी॥ दादनाहविगुडिमादगुजहहो। मगनगुडिविहयाभाउतानो हलाकनो॥ मवगुडिविजा
 नोवाहहस्तमये। सर्वज्ञानसर्वगगुडिं हस्तुट्टवत्। वज्रपद्मादिगुनान्मगुलकस्यस्त्वकी॥ मगुलगुडि
 नोवाहहस्तमये। सर्वज्ञानसर्वगगुडिं हस्तुट्टवत्। वज्रपद्मादिगुनान्मगुलकस्यस्त्वकी॥ मगुलगुडि

१५०

गोतिगुडिमुयागयागिनेरुक्तकी॥ मावायनरुगस्तर्वम १२ कप्रमामया॥ उकीस्वसर्विदीहर्तमगुयवाहिधानकी॥ हायगुन
 मूलास्तर्वमायासिद्धाकलरुती॥ उपदमगम्यमानैयतिर्सीधमेज्ञास्त्वकी॥ तस्मिंकालगुडिं वृद्धाकमलावने॥ अथैवयागिनीम
 गुं वउरुवन्निस्त्वद्वयावन्मरूप॥ सगुडिस्माद्वयरावसकल्पनात। वानाकामरुमवाका॥ सागुडिं सर्वज्ञावकी॥ अत्रियविष
 यालीकैसमनसैसर्वयागिनी॥ धर्मकायकैगुडिस्मात्सैरागकायिकैवेव। विरुतिनार्तकायस्यकायलहृत्कायिकी॥ वेमस्यादि
 पूतस्तुवउरुगुडिलिप्यत॥ कवर्चमरुमगुडिगुडियासर्वयागिनी॥ वलिमरुपगुडिस्माद्वयरावसकल्पनात। वानाकामरुमवाका॥ सागुडिं सर्वज्ञावकी॥ अत्रियविष
 यागुडिं सर्वकर्मचरकीलकी। नानायागपूयागुडिं यागुडिं पनमार्थकान्॥ धर्ममासास्मिस्त्वद्विस्माद्वयरावसकल्पनात। वानाकामरुमवाका॥ सागुडिं सर्वज्ञावकी॥ अत्रियविष

किं वक्रनाशकं न विगुह्य सर्वसोत्थं ॥ यं यमिदं यमार्गं यथायी तत्तु सखावतः ॥ पत्रमाहितया गत सर्ववृद्धमयं रवन्
 गुह्यं रुपनमाह याः नान्यगुह्यं मुच्यते ॥ सखापत्रगुह्यं ह्योऽङ्गीकृतमादिप्रदर्शनं ॥ कस्य वा नाहितकुतिर्नामैषा सिद्धा न
 तु सः ॥ वाधिमागं सिद्धिं यथावत् प्रकृष्टं कृत्वा वकाः ॥ तया हिया सिद्धोषः ॥ यथादिदुदर्शनं ॥ तस्माद्योगि सखापत्रमयं यागी
 यागकथं पत्रं ॥ ४० ॥ ह्यारुह गवास्वामी वज्रवानाहिकस्य काः ॥ सर्वयागि निलमायाम वज्रं ॥ ४१ ॥ बालयं ॥ ॥ ४२ ॥ तिथी
 वज्रवानाहिकस्य महोत्तमं गवास्वामि विगुह्यप्रतिष्ठा लक्षणं नाम ॥ ४३ ॥ अथ कथं न कृतं मडास
 हकानिती ॥ अत्र यायागिनी तदुक्तं वाधिवर्गकी ॥ अत्र यास्य रूपं पातुदिया वामातु कामिनी ॥ कर्म ज्ञाता विनीमका

१५१

दया विहाय मातना ॥ समाचारं तु दाता वमामकी समनस्तथा ॥ लावता रवन् रूपं वज्रं वारं मिषु पयवता ॥ यागिनादिमयं कर्म लाव
 नाप्यनूलावना ॥ ललना वनसना वमवधूती ह्यवदला ॥ प्रवला वाया सिद्धा ववृद्धा सर्वजनप्रिया ॥ कीकती मातनी ही साव
 रिता कामिनी ग्रहा ॥ वलिका मानदामिका वदुस्त्याग्निना दूका ॥ ४४ ॥ अङ्गितियागिना उक्तं कथं तु दादनी ॥ रुक्मिणी नानु सर्व
 वरुदं नमिदं पत्रं ॥ ४५ ॥ कीगुली दलने तलस्य वीगुलदर्शनं ॥ अथार्धं समानकालं तु अङ्गुलं दर्शयत् ॥ सर्वपातुः
 यागिना नु तस्माद्द्वयं समानकी ॥ नानाक्रमेषु विहया सर्वतगम्येती पनी ॥ कतिष्ठा कस्य पदं यत्नं वासकं नूतनं सतु ॥ अना
 मिका दर्शयद्यातु तदा तस्य प्रदर्शितु ॥ वदुस्त्यं हनू कीर्त्या ललनायादिपक्षेष्व ॥ तर्जनी दर्शयद्यातु मध्यमी वप्रदर्श

पादतलेपदनीयत्। एवमिति कर्त्तव्यमप्यपठविदेवना॥ गनुदनीयया तु कपालीतस्य दर्शयत्। सर्वसंधिष्यागीनीष
 हावाकाग्यागिनी। लिङ्गदर्शयया तु पुष्पे ययदर्शयत्। मृकनाकनायनायातमृगहर्नसमृदता॥ कमनुर्लदर्शययाम्
 पर्वतकस्य दर्शयत्॥ एवमिति कर्त्तव्यमप्यपठविदेवना॥ कर्त्तव्यमप्यपठविदेवना॥ कर्त्तव्यमप्यपठविदेवना॥ कर्त्तव्यमप्यपठविदेवना॥
 उपाप्यतपुति (गवेनात्) सर्वतर्कनविदः। वासनः। अविज्ञवा॥ किं ज्ञातं। यामुहकदस्य दर्शयत्। अपि सर्वमस्व
 नादुपाप्यतमापदनीयत्। कर्मातिदः। यामुहकदस्य दर्शयत्। गतनीषा। वायनी। कर्त्तव्यमप्यपठविदेवना॥ नितर्कदर्श
 ययाम् कर्त्तव्यमप्यपठविदेवना॥ मृकनाकनायनायातमृगहर्नसमृदता॥ कमनुर्लदर्शययाम्
 पर्वतकस्य दर्शयत्॥ एवमिति कर्त्तव्यमप्यपठविदेवना॥ कर्त्तव्यमप्यपठविदेवना॥ कर्त्तव्यमप्यपठविदेवना॥ कर्त्तव्यमप्यपठविदेवना॥

153

नागाहं अहं स्वकायमात्। तास्यैव दर्शययाम् कुरुदनीतस्य प्रदर्शयत्। नागध्वेनागधनखैव पनावृत्य सर्वदना। नायैदर्शययाम्
 नातकस्य प्रदर्शयत्। उडुवने सर्वमायापन्थतः। ह्यर्त्तवतशर्ककालदर्शययाम् मृकनाकस्य प्रदर्शयत्॥ मृकनाकस्य प्रदर्शययाम्
 नागीतयपकालनात्। एवमिति कर्त्तव्यमप्यपठविदेवना॥ कर्त्तव्यमप्यपठविदेवना॥ कर्त्तव्यमप्यपठविदेवना॥ कर्त्तव्यमप्यपठविदेवना॥
 ह्यैव हातव्यापीठिकां। एकर्षपर्यन्तपरीतवक्तिरवानूयत्॥ वनधर्मचरविहयायावदद्वय (गवेनी)। जाकिनीनालम
 विलीसहगार्त्तवमीतिनी॥ वजाकनविहयास्त्रीनायकनूपिनी। अहिपादस्वरावातु हृदी सर्वेषु मृदया॥ उकीस्वरावम
 विलीसमहिपादमिष्यत्। मृदासैकतकासवायागिनास्यहितकर्त्ता॥ मनुलवजमध्यपूर्वाकवजनायकी। सवैति

कसर्वही। मीलनामीलने समीवामीवदकितागिनी। उरुपैरुअत नववैमु सत रुकी ॥ कापीमर्द नहीगम। गुरुती पुरुवाधवाभा मा
 हृदय नागर्षावे नागी मोत उत्पकी ॥ ४० ॥ का मृति काय न मायावीड न दृष्टि वे। गमना व्यान मर्द पि हि सर्व पि हि वरु पते ॥ खदे नागी सी
 भा मी व स ह म मा रु सा य नी ॥ ४१ ॥ ह्ये री नागी नो द वा न र्य प। उरी दृष्टि ना। त र्य पु ति म् डा रु या गि नि दी य त सदा ॥ दर्प ॥ ४२ ॥ प
 रुष ही र व प दी प र्ण गु रू क। आ को ण प म क र द द वा नी र सूर्य क ॥ स ति म् दि न ग र त प्को द न गाल की। का ला रा या रु क प
 स गु ना। स ग रु स न थ ॥ रु य ज्ञा स की प न न म् प त वा द स नि ॥ ४३ ॥ वा ले स वा न। उ ले ष ना नि म् ॥ म् ॥ ४४ ॥ ना न ॥ ४५ ॥ वा ट
 सी व ४४ ॥ रु त दृष्टि म् य न ॥ ४५ ॥ कु म प्ता न री री क ट य ॥ प्र दि न का थ न प ना र्य प व थ ॥ म ती व र न ॥ ४६ ॥ रु द वा न ग

755

रं पा ले वा म रु त नी य नी। स र ता वी र प् वि ह्वा प डै न वि रु वा रु की ॥ व रु षा या द ही म् डा ता द ही व्या न मा द न त। ना ही प् लू न मा सा य नि
 ना या स र्व सी धि की ॥ रु रु क र्वा म् रु दृष्टि न रु वा या स रु द का थ ॥ उ र्व द्वा स प ति र्ह्वा या य न स र्व सी प दी ॥ सी ना हो या गि नी प रु
 इ रू वि गु रु का न की। बा धि पा र्ति क ध र्म रू स य न स र्व या गि नी। दी र्य अ द्धि पा दा। ये व वा ना का या गि नी स र्व सी। या गि नी स र्व वि
 क र्प रू रु क नी व दृष्टि या ॥ व ल पु रु ति वि रु स व थ ना वे क वि रु की। उ र्व मा या वि ला क ना स म् ड ज कि नी। स र्व लि प न मा र्थ व
 म् रु ति ना धि का ॥ व रु न द य म वा हि स र्व या ग प रु स य त। आ ला क रु क न या गी प का नी स र्व ना डि की ॥ या गि नी व रु म ध्वा प
 ता व थ य दि नी न र्थ। या गि नी म् पा य रू स प र्ति न लि या म की ॥ त वा रु मा रि भ त न स र्व बा धि स रू प की ॥ म रु रु न प र्वा

375

[illegible]

नाम्नाय वागमा अलिकालि पुराहवा ॥ धर्मममायान मूडा ॥ मूडा सरा ॥ की। वहुने गलि धान खावा उवा रुन कल्यनी ॥ पी० सुवि
 द्दविह्या मूडा अद्वि पाद सुथा ॥ आकाश वहुमाया के दिव्य योगि निमा लकी ॥ आधिपति मदा मूडा नामा सफका सव ॥ अवा
 रुता सया स्या संपवने सिद्ध सुतकी ॥ मध्य लक विलक ॥ नमरु सर्व योगिनी ॥ वर्य सन सही गति मध्य गीगा गुवाहिनी ॥ ध
 नमा दकया एत प्राप्ता पात कधन यत् ॥ वाने विहान की हा खाल रुनी ही यत्सव ॥ विले वरीयत यत् ॥ अद्वि गह यत् ॥ १०८
 हा नगर्ह की मा ॥ १०१ सर्व व सवान यत् ॥ मनु लव कुम ॥ अष्टा वय यदि मा पृथ ॥ प्रहा पा ॥ अला व ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥
 वर्य सी सुत पूर्व यत् नव वका नालि की ॥ वी न वी न मरु ॥ पा पा न दिव्य काय ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥

या ॥ एव वै सवा रुद वना लानु न आस्य की ॥ कुरु दय वार्ह वक रु न रु पार्थ की ॥ नाहि मरु गुड ली ॥ गड न जान री य पा द
 की ॥ अगुलि न गुह गनु पाद न ने रु सर्व था ॥ अगु पाति रु रु यर्म कर्म गिल लाट पार्थ की ॥ सी मा उ द न की ॥ अर्य योगिनी दी यत
 सुदा ॥ प्रति मूजा या जित ॥ अष्टा रु दी यत रु यथा कर्म ॥ वी न वी न की सा गीता मूड दाम नू जादिका ॥ मा ला ला ॥ अ न त्या स्य कला
 धू पा गी धा ने विद्य का ॥ रु ला रु ता पा ज पा या श्री ग दी पा क ल य का ॥ वर्यु द र्प ॥ रु व वि न नी वा म ला रु था ॥ प ता का न न दा
 धर ध ग थ ग ध कू ट की ॥ ग कि हा ना द ह न व की कि नी जाल की पत ॥ सी ला प न म कू ट य न र्व ना ना वि धी त था ॥ ए ग ज व र्पा प
 पी० सु गु द्द वि द्य सव ता व का ॥ वी न वी न थ नि या ए न सर्व मूडा प्र क थ ॥ वी थि स रु रु ता पा यी प्र डि न ला व का ल म की ॥ सु

432

वैयागी महादायनिगी कावसुविवागर्त्त। विनातसर्वमित्यष्विजिती सुसमाहिती ॥ सर्वलक्षणसंपूर्णसूत्राविधिदर्शनी ॥ सो
म्याशोमस्यकुत्राप्यविहितविधिती - - ॥ सोम्याशोम्यकुत्राप्यकुत्रोर्दोषोऽप्यन्यकी ॥ वीनवीनाहसंकोनाहसिर्निगमा। मातृना
कनयागनदमीलिकषाधिकारम्। मूलावप्रगितिकुषवदयसमयीधना ॥ उर्वीहावावसहावाकपाटी सर्वदहिनी ॥ विजिती
द्वयप्रयाणसुसर्वावाकनसन्निखाभा। अयार्द्धमालनेहलायागयागितिनायकी ॥ कृतीवत्यानिसंस्यानितस्यानंदविलेकथावि
जितानिवयकातिउर्वीयागकातिव। उदगमिदंतकुननिर्दगमयगीस्यती। त्वर्वनीवप्रयागनहातवीमकुलीविधिः ॥ त्वस
मीविजितमालीत्ववनीवगतस्वयी। वायाराषसूत्रात्मानिमाधसूत्रगच्छति। नहस्यैविजितानीवअनेकालस्यनसूटी। न

753

[illegible]

१० वैधर्मकायसीरागनुतिर्मातकायमहादः ॥ गान्धर्व ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
 विह्वलवर्धिवधर्मभद्रपुत्रमहा॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
 कीदृशयापामुमविठिकाओवाकर्म ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
 कर्तव्यवागिनाखयि ॥ लवमानस्यवीर ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
 हपयववर्धिवि ॥ नीतिनीवागिसन ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
 हानेसर्वक ॥ दवी ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
 यागता ॥ काटका ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

१५४

१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
 अथवासर्वकवाता ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
 पर्यङ्गवन्म ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
 पान्वितासर्वपाम ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
 नायथापिकदावन ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
 यामपापना ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
 यनिष्ठातथा ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

अथा ॥ स्वस्वकालवद्वानवायुहपादमिर्वैकित ॥ सर्वां कुर्वेदवाग ॥ कर्तुं न पृथक् समा ॥ वक्ष्यमानप्रयागनहर्षमहिषीविधिः ॥
 विलकलकस्य मङ्गलीवटविचित्रितं । आदिकर्मिकमङ्गलीपुतिविवादिनामय सिद्धिमाप्यतगीर्षी मङ्गलीविष्णुयसाधयत ॥
 ॥ इति श्रीवज्रवागीशकथमहाकुरुनामप्रतिविम्बमङ्गलममलावविधिल कर्तुं नामर्हि मङ्गलितमपटलः ॥ अथ श्री
 रुगवान्मामीवज्रजकमहाप्रह्लादभयतुयथा न्यायेयागिनीनीनरुतीगुती ॥ वक्ष्यमाणि निद्रा ननवदकस्य क ॥ कर्मधर्म
 समयम् महामङ्गलवदुर्थकां ॥ मृता लण्ठनयानापीपमगन्धकुर्मद ॥ यथास्य नग ॥ कर्मधर्म ॥ इति वला
 मारुवतिहस्तिनी ॥ मंखिनीवगुमाहाश्रविजितीरुवन्पिती ॥ बहुमाने वक्ष्य ॥ ल तयत्सर्विवक्ष्य ॥ यमिनी ॥ न ॥ मृत्यु
 समपुलाकृतिः ॥ अथ हिलपूष्पाहनिनासिकानाद्रुवोक्त ॥ इति वक्ष्य ॥ वपकगन्धकुर्मद ॥ इति वक्ष्य ॥ इति वक्ष्य ॥

१५०

धपुलीकदलश्रुवि ॥ मृगनाहि समैगन्धीनीलासलकुवति ॥ इति वक्ष्य ॥ मृगनाहि समैगन्धीनीलासलकुवति ॥ इति वक्ष्य ॥
 नावार्कसन्निहा ॥ कतकीगन्धकीहृयं नकुवन्धुकीनिर्ह ॥ इति वक्ष्य ॥ नावार्कसन्निहा ॥ कतकीगन्धकीहृयं नकुवन्धुकीनिर्ह ॥
 इति वक्ष्य ॥ नावार्कसन्निहा ॥ कतकीगन्धकीहृयं नकुवन्धुकीनिर्ह ॥ इति वक्ष्य ॥ नावार्कसन्निहा ॥ कतकीगन्धकीहृयं नकुवन्धुकीनिर्ह ॥
 नकामयत् पयस्यकनहसुन सीगन्धजडदकपाउयत् ॥ इति वक्ष्य ॥ नावार्कसन्निहा ॥ कतकीगन्धकीहृयं नकुवन्धुकीनिर्ह ॥
 इति वक्ष्य ॥ नावार्कसन्निहा ॥ कतकीगन्धकीहृयं नकुवन्धुकीनिर्ह ॥ इति वक्ष्य ॥ नावार्कसन्निहा ॥ कतकीगन्धकीहृयं नकुवन्धुकीनिर्ह ॥
 इति वक्ष्य ॥ नावार्कसन्निहा ॥ कतकीगन्धकीहृयं नकुवन्धुकीनिर्ह ॥ इति वक्ष्य ॥ नावार्कसन्निहा ॥ कतकीगन्धकीहृयं नकुवन्धुकीनिर्ह ॥
 इति वक्ष्य ॥ नावार्कसन्निहा ॥ कतकीगन्धकीहृयं नकुवन्धुकीनिर्ह ॥ इति वक्ष्य ॥ नावार्कसन्निहा ॥ कतकीगन्धकीहृयं नकुवन्धुकीनिर्ह ॥

नस्य हर्षं प्रपद्यन्तु सदा कारैः तस्य मध्यविहा नानेना दरीयापकं तथा ॥ सूर्यरुद्रा नमाध नैविहा नैप नम नै ॥ नाहो
 वतुषष्टि दलपद्मे नीलवर्तुतस्य अर्काने दीपकवर्माने यथा ॥ तस्याधः प्रपद्यन्तु सूर्यरुद्रा नमाध नैविहा नैप नम नै ॥ नाहो
 पस्कन्द आधम मयत ॥ ललेतापुत्रा सुनयन नमना पाथ न सीहिजा ॥ तस्य माधगर्तदरी मको जविश्वरूपिणी ॥ वतुष्काया लको
 दरी वतुर्मृदापदायनी ॥ महासूतवपदा सिद्धि सदा संपदायनी ॥ यत यत हिराव नम नै संपदकतली ॥ तत नम यती दवी विच
 नूयामतिर्यथा ॥ तावत्तम विवाजत वरुलितपुहा नमप नम वतु ली कलि तापका विलस सूरवलि नवामना ॥ दध्नस्कदवि
 कल्प नैव वतिता नानैव संपदनी ॥ यामया पसे मरु वरु मरु नम संपदक वामनी ॥ उर्वकर्म मृदाया दुदवा मृदा कथयत ॥

१५१

सागते गी ॥ वतुता दुष्प्रसादा गिनी पना ॥ ध्या नगाप नता नय वा मनी दुष्प्रकथयत ॥ सूरिस्वा ननता नित्यवत्त दू नममा रुकी ॥
 निर्विकल्पात्मका नानी नवीनप नरुति ॥ नागाकूल सुता वस्य कथा सुनत वनी ॥ पत्रिकर्म प्रनक्षरु गूडिका व नगिनी ॥
 वथागत नूना गसाया गिनी वलव नूरा ॥ विद्वीप कपाता दुधर्म सुन नकपति ॥ वीनकूल प्रसम सनै सामिर्वतु ॥ सदा
 प्रकली ॥ सागत मार्ग वाधिसस्य रुता यथा ॥ कोसु ननकप्य रुता नय ॥ उर्वधर्म मृदा तु समय मृदा सिद्धि यता ॥ व
 लिपुता सुन सुक समया साहिधीयत ॥ पुतिष्ठाम तुलवड सैता सीपुति पन नयत ॥ समया या गिनी त्वा न अतिषक पू
 यरुनी ॥ धर्मवड प्रवर्तु नित्य समय पालकी ॥ उर्वदवा स्वता वातु पुतिदरी नयात्मकी या गिनी यूप मध्य उजी ठकि पन

165

[illegible]

न० गलुदलप्यो० कान० वरुणी० काद० यो० कान० कर्तुम० नहाद० यो० कान० मुयाम्पोल्ला० का० न० म० हि० वरुद० यो० कान० म० द०
 म० वामद० किल० पू० मा० यो० अ० अ० कान० स० ता० वा० ॥ त० थ० व० क० पू० प्रतिपदा० न० स० या० व० द० मा० वा० सि० ता० व० स० क० मे० न० र० व० ॥ नाम० व० उ० अ०
 लि० जि० क० स० ता० वा० द० किल० स० र्य० को० लि० स० न० स० ता० वा० वा० धि० म० ता० स० ता० व० न० स० क० म० न० प० उ० ह० न० ॥ या० मा० ह० स० वा० न० ह० द० न० स० जा० कि० वा० उ०
 र्ग० म० र्ग० । व० उ० अ० म० स० र्य० अ० धि० नि० ग० प० अ० ता० नि० ग० धि० अ० ता० स० म० दि० ता० स० ता० कि० वा० उ० ता० वे० धि० य० ता० नि० वि० क० स० म० हा० सो० य० अ० की० जा०
 हा० न० व० प० वा० न० । आ० न० दा० सो० स० र्य० ग० न० हा० न० द० ह० न० नि० ता० प० म० ॥ ॥ या० ह० ह० न० वा० व० जी० व० उ० जा० कि० नी० स० थ० ग० ता० स० र्ग० व० न० स० मा० वा० ग० अ० ह०
 स० त० ० प० न० स० र्य० ॥ ॥ ॥ ति० धि० व० उ० वा० ना० ही० क० स० म० हा० त० दु० ना० र्ग० या० गि० नी० नि० द० न० पू० डा० न० क० ल० पू० दि० ॥ ॥ उ० क० डि० न० ० प० र० ॥ ॥

१५८

अथ० वलि० त० र्व० व० स० प० थ० व० द० न० पू० र्व० स० ॥ ध० र्मा० द० या० र्ग० र्ग० तै० व० ॥ द० द० ॥ वि० धि० । जा० की० म० हि० नु० या० ला० तु० ३ क० व० वा० दि० न० की० पू० न० ॥ स० मा०
 धि० मा० ली० व० य० रु० स० प० य० ला० गु० थ० स० प० य० न० । वा० र्क० वा० धा० मि० क० र्वा० द० ॥ जा० नि० मा० लि० व० ॥ ना० हि० म० ध्या० ई० न० थु० अ० प० य० ला० गु० वि० क०
 स० य० न० । पी० वा० को० सि० का० म० र्ग० व० स० म० न० स० र्व० का० न० य० ॥ स० क० थ० ग० कू० द० ह० न० दि० स० र्व० म० ॥ या० य० ते० ना० नि० वा० । हा० ल० न० स० र्व० वि० लु० न० ता० प० न०
 ना० ग० र्वा० कि० ना० । सा० ध० र्ग० प० न० मा० म० न० म० म० ती० क० न० र्गी० पू० न० ॥ धा० न० म० जा० स० दा० ॥ पू० अ० धि० स० न० व० का० न० य० ॥ आ० म० कु० य० पू० जा० कि० ना० वलि० म० जा०
 या० गि० त० ॥ क० ता० र्ग० अ० रु० ली० गु० न्दी० व० ल० म० ध्या० स० र्यो० गु० उ० व० जी० । ह० र्ग० स० प० पी० य० म० स० य० ती० व० ल० ला० ट० दा० ॥ आ० व० र्यो० व० र्यो० जा० म० य० ति० आ० ऊ०
 त० या० रा० र्क० ह० दि० म० कि० ॥ क० त० त० स० न० म० र्ग० कु० र्या० इ० का० न० ता० द० त० धा० द० न० दि० ता० ला० क० स० र्यो० न० या० गि० ना० क० धि० त० ह० द० य० म० जा० वलि० दा० त० ॥

न की। कउमदवता पूर्वकः। आदिसपनिवानानाकर्षयः। उरुनद्वयमपनिवानानाकर्षयः। पश्चिमवन्तसपनिवानानाकर्षयः।
 दक्षिणयमसपनिवानानाकर्षयः। अथमहाकृतसपनिवानानाकर्षयः। अथमपनिवानानाकर्षयः। अथमपनिवानानाकर्षयः।
 कृतसपनिवानानाकर्षयः। वायुवायुदवतासपनिवानानाकर्षयः। पुर्ववद्वयवन्तायादवतासपनिवानानाकर्षयः।
 कृतसपनिवानानाकर्षयः। हंसवन्तसपनिवानानाकर्षयः। हंसवन्तसपनिवानानाकर्षयः। हंसवन्तसपनिवानानाकर्षयः।
 यंकुमिद्वितकउयथासर्व॥ आनक्तिहाः कृतकजकितासपनिवानानाकर्षयः। हंसवन्तसपनिवानानाकर्षयः।
 गावर्लिदयान्निर्वाकः। उरुवन्तसपनिवानानाकर्षयः। हंसवन्तसपनिवानानाकर्षयः। हंसवन्तसपनिवानानाकर्षयः।

१०१

द्विमपुयकउयथासर्व॥ आनक्तिहाः कृतकजकितासपनिवानानाकर्षयः। हंसवन्तसपनिवानानाकर्षयः। हंसवन्तसपनिवानानाकर्षयः।
 वलतायावतनरुवन्तसपनिवानानाकर्षयः। हंसवन्तसपनिवानानाकर्षयः। हंसवन्तसपनिवानानाकर्षयः।
 कार्यतिमहावद्वयवन्तायादवतासपनिवानानाकर्षयः। हंसवन्तसपनिवानानाकर्षयः। हंसवन्तसपनिवानानाकर्षयः।
 मक्तिनयन्ता। आनक्तिहाः कृतकजकितासपनिवानानाकर्षयः। हंसवन्तसपनिवानानाकर्षयः। हंसवन्तसपनिवानानाकर्षयः।
 नीवकउयथासर्व॥ आनक्तिहाः कृतकजकितासपनिवानानाकर्षयः। हंसवन्तसपनिवानानाकर्षयः। हंसवन्तसपनिवानानाकर्षयः।
 वीतिमक्तिनयन्ता। आनक्तिहाः कृतकजकितासपनिवानानाकर्षयः। हंसवन्तसपनिवानानाकर्षयः। हंसवन्तसपनिवानानाकर्षयः।

कृञ् अथ वा समाहिता मका। वर्तयद् ई न सर्वता थिकादिष्मदि। पञ्च दिग्गुमलसहस्रविह नरुहवृत्तिवकु महाठ्॥ अलिमि
 मिमाह पञ्चान्न नगाठ्॥ सहस्रसंदनिलठ्॥ महसहस्रठ्॥ तिहस्रसहस्रठ्॥ नरुजनवृद्धसहस्रठ्॥ नरुहवृद्धनमहसहस्रठ्॥ अरु
 दुसिपत्रमाथनरावृद्धशिवमिसहिवृद्धनपावृद्ध। अनिअनरुवृद्धिअते। अरुजनरुलाअरुसर्वद्विउलाननुपनरु॥ अवि
 उवमादिदुसर्वकृगहितयदुपदुत॥ मयाककुषुकत्यवृद्धातव्यमदिताहया॥ इदं नरुहसहस्रानिअकावपदु॥ पाउं प ११२
 मरुहसहस्रठ्॥ उदाकेरीयास्वयवृत्ति॥ पञ्चरुहसहस्रठ्॥ अयादापयहनेवदु॥ यागिनाना॥ पितृप॥ नादनेकावृत्ति॥ उदावृत्ति॥ अदि
 हंदापयहसर्वरुतकी॥ दक्षिणादापयहसहस्रठ्॥ अयादापयहनेवदु॥ अतदिनरुहसहस्रठ्॥ अयादापयहनेवदु॥ अतदिनरुहसहस्रठ्॥

[illegible]

۱۹۲

गच्छेद्विषयपूनायगमनायवविहर्षयथासुते॥ उं वज्रमूर्तिप० विसर्गस्तुष्टदवतानाम्। तसर्वस्यदत्तः।
 तपश्चन्द्रिष्टस्यवर्तिर्सीतानकर्तव्यं। समथसिद्धयामुत्तममयसूक्तकालामुजोविरावयत्। यान्त्रिकाननादनदयोः
 इष्टिष्टतागुक्त। यथाध्यादिर्दीदृशोत्तममयसूक्तकालामुजोविरावयत्। यान्त्रिकाननादनदयोः
 तपश्चन्द्रिष्टस्यवर्तिर्सीतानकर्तव्यं। समथसिद्धयामुत्तममयसूक्तकालामुजोविरावयत्। यान्त्रिकाननादनदयोः
 इष्टिष्टतागुक्त। यथाध्यादिर्दीदृशोत्तममयसूक्तकालामुजोविरावयत्। यान्त्रिकाननादनदयोः

۱۹۴

[illegible]

नमो नुनाय पलिफ। नाना पुष्प पुकना फलमिति न साक्षात् समनवा ॥ नमस्तुभ्यं मेयादिना वना पूर्वदो। स्वदि मका नमस्तु
 र्यं मनुलसि नडा। का नमस्तुभ्यं गाले ॥ पुका मी कृत्य वज्र वाना ही प्रमत्त गुन वागिनी वा। धिस सत्तथा गती। यथा स्तुन पुना सनी क ह
 हीरु निर्गत पु वधु वधु की प्रहा व ती मरुता मा ची न मता र्व नी लै क न्य नी ड म द्यु या विरु व जी हा ति ॥ जे ना व ती म हा र्ने न वा वा य ॥ ११७
 वग्न स नारु की म्मा मा द वी स रू डा ह य क पू र्व ग न ना या क्का हा ति भ व क व ग्न ख पु ना हा मो पि नी व क य मि ती स री ना म हा व ला व क
 व र्ति नी म हा री र्वा का य व का हा रि धे र्वा ति नी ल न क सि त व र्ति ॥ जे ना व ती म हा र्ने न वा वा य ॥ ११८
 व मू डा ध ना रि श व ज प म व क क पा ल व ध उ रि वा र्ने क त ति ना रि ॥ क र्ति क पा ल व ही म वि ती। प हा म गु क पा न य व वा दि रि श

यदि पृथग् सर्वं प्रकृत्यैव दनाया पदना ॥ सुकर्मस्यैव न प्रकृत्यैव दना प्रित न ल ग म न वा धि वि हा त्या द मार्ग शु य त आ स हा व नि र्वा
 न ना नू ॥ अत्र न वा व ना वि धि वि वा य। पु र्वा पा न न म न ना हा प्र ति प रू य। न सि स प दी र्ज लि क त्या म्मा पा ० पूर्व क र्था ग त म ॥ अत्र
 य न। न गु र्थ म्मा ॥ ॐ सर्व स र्वा नी सर्व सि द्ध य म प य ती सर्व र्था ग ता ॥ अ धि ति ॥ ॐ स र्वा व र्ण वा ॥ सर्व ध म रि स्त वा व र्ण वा
 मिति ॥ व द न न र्ज पु क पु ना पूर्व का न्म र्वा ध म्मा र्वा ति मि ला प्र ति हि ता ॥ क र्त्त व य ना म व य म धि म्म र्वा न ह म्म दु क
 न र्ज जाल न ना हा सी क त्या ॥ ॐ न्म ना हा न व ज म्मा र्वा ति मि ला प्र ति हि ता ॥ क र्त्त व य ना म व य म धि म्म र्वा न ह म्म दु क
 र्त्त व य ना म व य म धि म्म र्वा न ह म्म दु क ॥ य चित म्म न क प म्मा प मि र्ज का न र्ज न ति म्म न ॥ ॐ न र्ज क र्त्त व य ना म व य म धि म्म र्वा न ह म्म दु क

۱۹۸

दर्थपनी। सूर्यस्य ज्ञां कानाधिष्ठितसूर्यस्य वदन्तु दयी वज्रगनाही माता। अथात्। ततः हृदि जन्मि जाले सर्वसत्त्वा रूपं पापनी। नि।
 व्याघ्रस्य तन्निप्रयन्ममरुगवती दज्जहीत्यहं काने कर्पात्। तदेनू सनाहो विथे जामलानुत्तूर्यमपुनसित ज्ञां काने दृष्टात् मम
 मातामरुत्तु गकानौ सिती चकुत्तमलया। गनवेदनविवमलेनि अर्थवृद्धे गनगुणमतिमकुषधि वेदना कालिपिभक्तु कलादिपु
 विमोदापनातिविवमप्रविनक्ति सनवी सना दानदहनामि कौ ध्यायात्। ततः हृदि जन्मि सीधादितगगनस्य दानदवीपूजनाद
 द्वापूर्वाक दवीगते नयादिपूजये सनीपूजयेत्। कौ कानमकुपापये सना मम वदन्तु नादवाभावहृन्नात्यत्। ततः
 कलालीलावागी जहं काने कर्पात्। तत्रायं मरुत्तु उवागे पुष्टा सर्वधर्मा गगनगुहाहं। ततः दृष्टः। नैवादि। गगनस्य अकाश

॥ त आगता नीतीयति । वैद्यमृतरुतपैव तथागतामक कला ले भानिर्मितना । रयेतीवमदै गपतवशीभवगीत धतिरिध दवास्त्र
यतातात्कानपरायातेधैकमकयूनकमनुमीसगाधैरुमपुर्षेतिधै यथाहिजातमार्तलस्त्रापित ॥ सर्वतथागताधतथाहैस्त्राप
यिष्मामिधुद्वैदियतयानिस्त्रागताधप ॥ निरिहनास्मानमतिविषय ॥ ईसर्वतथागतातिपकसमयप्रियहं ॥ ६६ स्त्रानमाधिका प्रतीवि
पयस्त्रयस्त्रायाधियुनस्यैविकयहूततस्त्रनिर्मितपुव भुतिदधीतिहै निर्मितनामाविधयकासिनास्मानमतिनृकवक
मातकुमला मृतास्त्रादंरुखायावदिर्विध्यास्त्रानतीसीहै पूर्वक ॥ इतादिदोषनहिनेमकुनपुन ॥ कजायेमकु ॥ ६७ यथापुन
कुका मश ॥ तदामकुनातिहै ॥ ६८ कजायक ॥ ६९ यथापुन ॥ ७० मत्रतपति ॥ ७१ नीविधायपुर्षेपनिस्त्राम्यनता कर्मवगिधायार्थदवाहै

कानमृदुतसर्वधर्मथतपुनपत्रा ॥ ७२ यथापुन ॥ ७३ त्रैविहमदिति ॥ कजायेमकुनमकु ॥ ७४ ईआ ॥ ७५ ईकजसत्रसमयमनृपालयवजम
सत्रपुतिहाद ॥ ७६ तामरवसूतायामतवसू ॥ ७७ यथापुन ॥ ७८ मत्रवमृननकमरुवसर्वसिद्धिमपुपदुमर्वकर्मसूवमविहैगिपैरुनहैरुहैरुहै
॥ ७९ गवचजमापमैववजीहवमहासमयसत्र ॥ ८० हैरुति ॥ ८१ सैध ॥ ८२ यिमटिदिदयाकानमतिमृ ॥ ८३ रुतयपूमादिपू ॥ ८४ मनीया
॥ ८५ विहायपागमकुन ॥ ८६ प्रापूर्ववसर्वक्या ॥ ८७ नृदनातुसैधायानुपूर्ववसर्वरुतागपतकालनिन ॥ ८८ तनगुनवृहदाधिस
॥ ८९ रुहैसैपूक ॥ ९० रुहैवातपुतामासयतसिदमयी ॥ ९१ ततपुतामैधायौ ॥ ९२ वीप ॥ ९३ तनृवसर्व ॥ ९४ योदिति ॥ ९५
॥ ९६ तनृमलकविसु ॥ ९७ दागसव्यपर्यै ॥ ९८ नसूराह ॥ ९९ योम ॥ १०० यथाव ॥ १०१ यसर्वसहा ॥ १०२ पापदहता ॥ १०३ तययाव ॥ १०४ विहायादपू

वंकी। आकाशपत्रितायी स्वादेकायीपद्मकायीडी। कारेकनडासः। यदिदुर्गतायासिदिहः। नादे। दुर्गतायासः। रुस्तु
 लुसिधुवउ३सयैरुपयागीसुसुपु३पूर्वविधिः। उपरु॥ उर्वजपरावतायकावि। उदनेशानुहाः। एलोकायमनिमः। अमर्षासमय
 सर्वनासु३रुपावाकः। समिगनाधनतस्यनायागे॥ सपुनरुजापरासः। सुकलपेपविहारवतिमधवा। नविम
 न३पनिषदमहिरुवनीय३वादिवरवतिः। नविषगजकिपादि। न३पदतारुवतिः। पजितमृतेरुवतिः। मि
 क्षसतिमृतापसिन्नतसकुहिमलिकाकथि। यसे। उदरदीपतसमृतापकवित्तवः। तस्यामृतापत्रमदम
 सीतिहितमरुवति। उतिरपडन३दवातामयवापिसर्गपकनतसमार्थरुवतिः॥ किंवदन्ताकृतमयापियप्रभियमः॥

गतावयवागीपश्चद्वैवर्तिनी। नृपः। रु
 लहितावाहाहिवागिनी॥ म३नमसितासी
 वायुहृतीपुकार्तिता॥ नृपलमेनीसमा
 कीधने। म३वासदाकासीविगुह्यावेमिहकृत
 ताता। ता३स्य३हृतीयाव३नमनागना
 इदनी॥ कपालकृतम३नम३धमापा

माहितमस्यनलकनमतिमृदुतीतनह
गिनी। जेतामपूरुसो। व्यातापावकेशी। नो
वर्ला। नीपश्चिमहामउरुम। चस्यनोतया। मृव
रीकहदयि। व्यानमिनि। अनधरुता। नक
गवक। सर्वतथा। ताहिषकपदमादय
ह॥। एथर्मतावयकृष्णद्वितीयनरैविलाट

नर्महवाकर्हि। एतवकलमवत। एवामकमनूह
वकलुदय। नीरुतीयथा। नीमिगिरुय। नप
जाअसवककिनी। असवपाववह
कापिकृष्णदीती। एतुगरीतानि। गोवादीतीउ
द्विनिधताकृदयावजवाजाकादीपुहापूरुता
दतलामतथा। हसमाहपिहनेकुनागवज

वैभवात्तथा तदनुक्तिमर्ह्यप० ॥ १० ॥ नृपतिः
यत्किं नरोहं नृवविश्ववर्जी। नरोहं नृववि
हावयन्त्युत्थो वदुनशीतनीतकी। पृथामपुलम
मथ्यस्युमासा नैविरुयलुतथमिप्रिलुयतवड
नरीयूकैवडसुहं नरीकतथातस्मिं वडगदयस
निर्वड-वडस्योपनिहासुनी ॥ अनयामध्यगतवी

तकमलनक्षत्रानि नानि ववजी कलधनी साध्यपूगवर्हिना दृष्टुं ॥ १० ॥ अमुकस्य विरुता कर्षयहं ॥ १० ॥ तिनाहाययति
यागी। ततः सादवा विधिवसुकिपणानेन सयसी कथानयादयति। यथावदानीयस्य विरुप्रवर्गयत। दवीकुमकुमालीतर्गताड
या ॥ ततः संपूर्णनिरीविहरी विहंगलकुकामदुयाकाक पत्रवन्धरुतैकनपदीजलिहं साधकः ॥ १० ॥ अथविनी
वनामूकैनी वडगवाहीता दानकलिकपालभ्रिती नृपतिर्विद्यावर्धनवतीति कजवावाकावन्धवधि॥ अथातगवतीनीगु कः
थनीतंसदवतीनी महाधिपानी महामर्दुमहापुत्रं महामाया महचरी ॥ १० ॥ संहनयपीतुं लाईसुतुतपूतथापुत्रकानामिषी
मातामहा मायतिविपुता ॥ १० ॥ लासुगानी विद्योपपदं महचरी जयाविद्यातमायुयो विधयासाधकं न्येनथा सदेवगध्वर्वगतासः

यत्तु सूर्यमानुषान्। विद्याधरपिताम्भवन्। वसमानपतिरुक्तानिहल्लग्नस्तुलजातिव। महावर्षा कवीविद्याठठुगा
 कवीतथा। माहेनैस्तुमनेयेवविद्वषाहादकादकै। वत्थकेपतस्तुमनेवानवविधकोरुहर्न। पठितकनकविद्यावाचासिद्धिंवेसा
 थक। नरुपेनवहकस्यानोपगताविधीप्रता। अस्तुमनारुवसिद्धिर्दवीसत्यैवदाम्पई। मरुतेवमहामाय सर्वभूलाकसाधक। प्रवद्यो
 निमलायागीदिवीनरुपकृतिः॥३॥ नमस्तुतयेवजवागर्षी। आप्यिमाहेतुदलाकमाप्रमहाविद्य। इतस्तयोवहमहावजवजा
 हनजुक्तिरूपजक्तिरवम्भकनीनकुशामाले। वप्रभाधुनिकाधतिकमालिनिते। जगतिनिमन। प्रहदनिपनाक्षियविक्रय
 कनिसुमनिमदतिवजवानाहीमहायागिनाकामेधनीवाह॥ तद्यथा॥ प्राप्तेगहनप्राप्तकिंकिनिर्विपिनिधूनश्वरुहम्

[illegible]

अथारुगवतीमहासायापठिकमिडा। अस्मात् । नैत । नामगुहसूर्यगुहवागुहपञ्चानकविंशतिवनासुवर्ण्य । तद्वसिडा
तवोयावदावर्तियतिताव । कुतस्ते ननुगम्यता । तद्वद्वानिनाकपययि । सावपतिकुद्ववतसाउडाटनविद्धपतस्तुनैव
कूनरुठ्ठवसाह । कसुमैसकुसुविहवाका । किपेडु कादीमीदरीयति । अमनीगनैसकुरुपुगुहअपतगमना । कथंनरा
हैद्वीयति । मयूवपिष्टिकैसकुरुदमा । अमय । ननुपममयति । तनायह । तद । किपेडुनैगवनेद
यतिमयूवपिष्टिकैविपगीत । मय । पुनरुपयनह । तवगीत । अथ । तमनामायाह । तय । पूर्वदिहापमपुन
मसाधिकातृगहनाममना । उरुम । अथकनापथिममहाकाधनती । दकि । पासाधकानैअनयमहाप्रत्यय । ननुम

१८२

सामलापकयागगाकनै । गायथमिहनादीमहाका । अमनसगवतीनाममना । नमयथायागीदधमै । तवितीगविहीपलाका
नरुयेकन । मूलनिनाईगवापला । कीकिलिदतनिगीषवा । इवतवताथक । नागकमीनपादपाथयथकुमरीमहिषनाऊ
नरुनकवापुगधतकनपिमावमवा । नह । किायताममकथममना । लुक । मालगु । मय । वताउरुतादय
ति । महासायादवा । ममनै । ममारुगवतीवजवागवती । उं । कांघायसर्वइह । तद्वद्वानिनाकपययि । सावपतिकुद्ववतसाउडाटनविद्धपतस्तुनैव
कूनरुठ्ठवसाह । कसुमैसकुसुविहवाका । किपेडु कादीमीदरीयति । अमनीगनैसकुरुपुगुहअपतगमना । कथंनरा
हैद्वीयति । मयूवपिष्टिकैसकुरुदमा । अमय । ननुपममयति । तनायह । तद । किपेडुनैगवनेद
यतिमयूवपिष्टिकैविपगीत । मय । पुनरुपयनह । तवगीत । अथ । तमनामायाह । तय । पूर्वदिहापमपुन
मसाधिकातृगहनाममना । उरुम । अथकनापथिममहाकाधनती । दकि । पासाधकानैअनयमहाप्रत्यय । ननुम

प्रायतः सादनेन वयं त्रिहो लघुवृद्धा प्रयातः। तादृश्या विना पुरुषं नृपम् ॥ उं वज्रवेमावनी मखाह
मलापमिशाममैपयकर्म मम भलतैसाकावनामे अया रुतिका कुरुके प्रह सुमरया तत्रिले मरु
वा माछे हनकपादेर्दवी वक्र स्यात् वनाव यथा। स कर्म तत्त्व ह वजा यागिनी तत्कात् नृपसि
नृप उं। पूरय हृदय हीमान का प्रप्रतिनृपक। हृदय ध्यात्वा पूगी मय
नृप (मोर्षा याः पञ्च यागि यः पैंवा मरुध्र मा मना धा वनी वृत्ती उ नी म स उ म वा
सादयत्। प्रियत्न न नीयाया हा धो विरु विरु हि व। प्रथमै ध्यायामे न दनू क म र्सा

मरु आ पद ४३३ नृपसि
तायेन स नृप (ध) दिति ॥
मरुद्वारा गुमं कलि (ध) यः
नीवा मरुध्र मा
मरुध्र मा
मरुध्र मा
मरुध्र मा